मासिक —

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9	बृहस्पतिवार 10 फरवरी 1983	संख्या 10

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर

सन्तमत का मर्म

इन्सान के अन्तर ज़िन्दगी है, मेरी अपनी है आपका पता नहीं, आप अपना जानें, यह कुछ चाहती है, क्या चाहती है ? इसको असल में पता नहीं। कभी दौलत चाहती है, कभी इज्ज़त चाहती है, कभी मान चाहती है, कभी रब्ब चाहती है, कभी सत्तलोक चाहती है, कभी अनामी चाहती है, कुछ न कुछ यह चाहती रहती है। मेरा जीवन गुज़रा, मैं साधारण हिन्दू हूँ, ब्राह्मण के घर जन्म हुआ, राम, कृष्ण, ब्रह्म देवी, देवता, परमात्मा को मानने वाला था, दिल के अन्दर कोई चाह थी, जैसा कि मैं आपको कहता रहता हूँ चौबीस घण्टे रोने के बाद

मेरा एक दृश्य था जो मुझे हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गया। उन्होंने मुझे यह राधास्वामीमत या सन्तमत दिया। इन की वाणियाँ पढ़ीं तो अक्ल चक्कर खा गई। वह कहते हैं, राम भी अधूरा रहा, कृष्ण भी अधूरा रहा, वसिष्ठ को भी पता नहीं लगा, पराशर को भी पता नहीं लगा, मुसलमान भी भूल गये, जैनो और बौद्ध भी भूल गये, ऐसी वाणियाँ आप रोज़ पढ़ते हैं किताबों में। दाता दयाल से तो मेरा विश्वास टूटा नहीं और यह मेरी समझ में नहीं आता था कि कैसे सब भूल गये, उस वक्त मैंने प्रण किया था कि अपने जीवन का अनुभव ब्यान कर जाऊंगा जो कुछ मेरी समझ में आयेगा। मुझे किसी बात का बिलकुल कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है, कान को हाथ लगाता हूँ, क्योंकि मेरे ज़िम्मे यह duty लगाई गई थी, दाता दयाल ने कहा था, फ़कीर! चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना, हज़ूर बाबा सावन सिंह जी की ज़ात पाक ने मुझे कहा था निर्भय होके काम कर जाना इसलिए मैं आज चौंतीस-पैंतीस साल से यह काम करता हूँ।

आज आप लोग आये हैं मैं यह बताना चाहता हूं कि मैंने गुरुमत को क्या समझा, बाहर के गुरु को क्या *duty* है और वह क्या करता है यह दाता दयाल की ज़बानी सुनाता हूं :—

सत्तगुरु प्यारे ने सुनाया मर्म कहानी हो।
बूझ अबूझ का सार सुझाया, सूझ असूझ की बात बताया।
तब सत पद का भेद लखाया, मिल गया पद निरवानी हो।।
सुरत शब्द की राह दिखाई, सन्त पन्थ की डगर चलाई।
सहज ही अब अपनी बन आई, हो गये ठौर ठिकानी हो।।
जीव ब्रह्म का रूप पिछाना, उपजा हृदय सत मत ज्ञाना।
घट का मिटा तिमिर अज्ञाना, पाई अगम निशानी हो।।
अहंकार मद लोभ त्यागा, क्रोध मोह का टूटा धागा।
सोया भाग आप अब जागा, छूटी आनी जानी हो।।
सहस कँवल गढ़ सुरत से तोड़ा, त्रिकुटी ब्रह्म से नाता जोड़ा।
ब्रह्म गुफा माया मद फोड़ा, राधास्वामी धाम लखानी हो।।

यह दाता दयाल महर्षि जी का शब्द है। वह कहते हैं सत्तगुरु ने क्या किया? उस ने मर्म बताया। मर्म कहते हैं *Secret* , भेद, राज़ या असलीयत को। क्या हो गया उससे? राधास्वामी धाम पहुँच गये। यही बात स्वामी जी ने कही है। स्वामी जी की वाणी मैं इस वास्ते सुनाता हूँ कि तुम में से

कोई आदमी शायद दाता दयाल को न मानते हों, आप उनकी वाणी को कबूल न करते हों तो स्वामी जी को वाणी सुन लो :—

गुरु ने अब दीन्हा भेद अगम का।
सुरत चली तज देश भरम का॥
बल पाया अब विरह मरम का।
भटकन छूटा दैरो हरम का॥
वर्षन लागा मेघ करम का।
संशय भागा जनम मरन का॥
तोड़ दिया सब जाल निगम का।
सुख पाया अब हम दम दम का॥
फल पाया आज हम सम दम का।
भँवर हुआ मन सेत पदम का॥
फूंक दिया घर लाज शरम का।
काटा फंदा नेम धरम का॥
ज्ञान ध्यान वाचक हम छोड़ा।
भक्ति भाव का पहिना जोड़ा॥
भक्ति भाव की महिमा भारी।
जानेंगे कोइ संत विचारी॥
सत्तनाम सत्तपुरुष अपारा।
चौथे माहिं करें दरबारा॥
सुरत शब्द मारग कोई पावे।
सो हंसा चढ़ लोक सिधावे॥

सो मारग अब राधास्वामी गाई।
कोइ कोइ प्रेम भक्ति से पाई।।

यह है भेद। क्योंकि मेरे ज़िम्मे निबल, अबल, जीवों की मदद करने की *duty* है। दाता दयाल ने मेरे नाम शब्द लिखा है।—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दु:खी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा।।
तीन ताप से जीव दु:खी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी।।

अच्छा! अब आप लोग आये हैं, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तुमको फ़कीर चन्द! वह मर्म क्या मिला जिस मर्म ने तुमको इस मंजिल तक पहुँचाया? मंज़िल पर अभी मैं ठहर तो नहीं सकता, सच्ची बात कहता हूँ, कोशिश करता रहता हूँ मगर मुझको मंजिल का पता लग गया। मैं, मजिल में ठहर नहीं सकता मगर मैं उस मंज़िल को जानता हूँ। और वह कैसे जानता हूँ, क्योंकि मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, इसलिए बताता हूँ कि उस मंज़िल पर मैं अनुभव करके कैसे पहुँचा? केवल मन के रूप का निश्चयात्मक पता लग जाने

से मैं उस मंजिल पर जाने के लिए मजबूर हुआ, क्योंकि मैं तो अपने घर जाना चाहता हूँ या अपनी आद अवस्था को प्राप्त करना चाहता था, यह मेरा ज़जबा था। तुम लोग तो मेरे पास आते हो, कोई पुत्र के लिए, कोई मकान और कोई जायदाद के लिए और कोई किसी काम के लिए परन्तु मैं तो इस गरज़ से नहीं जाता था, मैं तो जाता था अपने आद घर को जहाँ से मेरा आद है जिस की मुझे तलाश थी वहाँ जाना चाहता था। तो दाता दयाल ने मुझ पर बड़ी दया की कि आप लोगों को सेवा का जो मुझे काम दिया, इस सेवा से मुझे अपने घर का पता लग गया। वह भेद क्या है :—

सत्तगुरु प्यारे ने सुनाया मर्म कहानी हो ।

अगर मैं कहूँ सत्संगियों ने मुझे सुनाई मर्म कहानी हो ! तो मैं झूठ नहीं बोल रहा। दाता दयाल ने बहुत कुछ समझाया, लिखा :—

फ़कीरा ! गुरु तो तेरे पास ।
तेरे तन में तेरे मन में तेरे स्वासों स्वाँस ।

मगर मेरी खोपड़ी में इस बात का समझ नहीं आती थी कि गुरु मेरे अन्तर कैसे है। मैंने जो कुछ

यह मर्म पाया है केवल तुम सत्संगियों से पाया है। कल एक औरत की चिट्ठी आई, पढ़ी लिखी है, कहती है बाबा जी! अगर आप इन गुरुओं के विरुद्ध न कहा करें तो आपका डेरा बहुत चमक सकता है, हजारों-लाखों आदमी आपकी शरण में आ सकते हैं। मैंने उसकी चिट्ठी पढ़ी, सोचता हूँ, जब मैं सच्चाई व हकीक़त ब्यान करूंगा तो फिर बाकी जितना आडम्बर जो यह गुरुमत का है इसका खण्डन तो अपने आप ही होगा। अगर मैं यह सच्ची बात नहीं कहता तो मैं अपनी ज़मीर को कुचलता हूँ और आप लोगों से झूठा मान लेता हूँ। ऐसे २ केस मेरे पास आते हैं जहाँ कोई कहता है बाबा! आपकी अंगूठी हमने पहनी हुई थी हमें फलां तकलीफ होती है, हम अंगूठी को मल लेते हैं, राज़ी हो जाते हैं। कोई कहता है मैं किसी के अन्दर गया, कोई कहता है मैं अभ्यास में गया, कोई कहता है मैं मरते समय ले गया, अब मैं यह सोचता हूँ कि अगर मैं इसको पर्दे में रखता हूँ तो लोग इस पर्दे से इज्जत करेंगे, मान करेंगे। वह जो मैं इज्जत, मान या धन पर्दे में रखकर, आप लोगों की आंखों में मिट्टियां डाल कर लूंगा तो उस

कर्म के क़ानून से मैं कैसे बच सकता हूँ, यह बताओ मुझे। स्वामी जी ने कहा है।—

कर्म जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना!

तो मैं कर्म से नहीं बच सकता, उसकी सज़ा या जज़ा जो कुछ होगी मुझे मिलेगी इसलिए मैं मजबूर हूँ सच्चाई ब्यान करने के लिए। मैं न किसी गद्दी के विरुद्ध हूँ, न किसी मज़हब व पन्थ के विरुद्ध हूँ, मैं हूँ सन्त सत्तगुरु वक़्त, इस वक़्त के अनुसार सच्चा ज्ञान देना चाहता हूँ देता हूँ, अपनी *duty* पूरी करना चाहता हूँ, कोई मेरी बात को सुने या न सुने इसकी मैं परवाह नहीं करता। यह भी मैं जानता हूँ कि जीव, जो बेचारे अन्धविश्वासी हैं, मेरी साफ़ब्यानी से उनको धक्का लगता है, यह धक्का तो आज भी पहुँचेगा और कल भी पहुँचेगा। तुम ने विश्वास रखना है, जो कुछ मिलता है विश्वास का फल मिलता है, जहाँ मर्ज़ी है रख लो। जो राम पर विश्वास रखते हैं क्या उनके काम नहीं होते? जो देवी पर रखते हैं उनके अन्दर देवी नहीं प्रकट होती? जो किसी गुरु पर रखते हैं क्या उनके

अन्दर वह गुरु नहीं प्रकट होता ? और न मैं जाता हूँ, न कोई और गुरु जाता है, न देवी जाती है। वह कौन जाता है ? वह तुम्हारा अपना ही विश्वास जाता है, जहाँ जिसकी मर्ज़ी है रख लो परन्तु यदि तुम यह चाहो कि अपने घर पहुँच जाओ तो इस किस्म के विश्वास से तुम्हारा फ़लक भी तुम्हारे अपने घर नहीं जा सकता, नाह। जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारे के लिए या असलीयत या अपने आद घर को पहुँचने के लिए जब तक तुम किसी बाहरी ताक़त पर विश्वास रखे बठे हो और यह समझते हो कि जिस पर तुम विश्वास रखते हो वह बाहर है, तुम्हारा यह चक्कर खत्म नहीं होगा। तुम लोग, कई आदमी मुझ को प्यार करते हैं, पैसा भी देते हैं, मन्दिर उन्हों के सहारे बना हुआ है यह, परन्तु मैं इस बात की परवाह नहो करता कि मेरी साफ़-बयानी से वे शायद परवाह न करें, मुझे पैसे न दें, नहीं देते हैं तो न दें, जिसका जी चाहे चार पैसे दे यहाँ जिसका जी चाहे चार पैसे न दे, मुझे यह इच्छा नहीं है, मैं हूँ सन्त सत्तगुरु वक़्त, बरसरे एलान कहता हूँ, इस वक़्त जिस सच्ची तालीम की ज़रूरत है, वह मैं

देता हूँ। क्या तालीम की ज़रूरत है, क्या भेद है ? गुरु ने क्या मर्म कहानी सुनाई ? ऐ इन्सान ! पहला मर्म तो यह है कि तुमको जो कुछ मिलता है तुम्हारी नीयत का फल मिलता है, बस ! जो कुछ तुम करोगे, जैसी तुम्हारी नीयत है, जैसा तुम्हारा भाव है, जैसा तुम्हारा विश्वास है, तुमको उसके मुताबिक तुम्हारे जन्म में, दुःख और सुख उठाना पड़ेगा, कोई बच नहीं सकता कर्म के क़ानून से, बिलकुल ! इस भरोसे पर मत रहो कि किसी ने किसी भी गुरु से नाम लिया हुआ है और तुम चारसौबीस, हेरा-फेरी, धोखा-फरेब जो मर्जी चाहे करते रहो और तुम बच जाओगे, तुम्हारा फ़लक भी नहीं बच सकता। यह मैं क्यों कहता हूँ ? मैंने बड़-बड़े महात्मा व बड़े-2 नामधारी देखे, क्या उनको विपदा नहीं आई ? वे बीमार नहीं हुए ? उनको मुसीबतें नहीं आईं ? उनके सिर नहीं कटे ? उनकी बेइज़्ज़तियाँ नहीं हुईं ? तो भई ! अगर वे सन्त या बड़े पहुँचे हुए थे तो अपनी विपदा को नहीं काट सकते थे ? इससे साबित हुआ कि उनको भी जो कुछ मिला वह उनके अपने कर्म का फल था, इसलिए मैंने तालीम को

बदला है, दाता ने कहा था तालीम बदल जाना। लोग कहते हैं, मुझे तो पता नहीं, बाबा! तू फलां जगह प्रकट हुआ, तूने यह कर दिया, मेरे तो बाप को पता नहीं होता कि कौन जाता है वहां, मैं उन आदमियों को नहीं जानता। तुम सोचो! मैं क्या कह रहा हूँ। तुम कहते हो तुम्हारे अन्दर बाबा फ़कीर प्रकट होता है या कोई और गुरु प्रकट होता है, तुम सब भूल में हो। थोड़े दिन हुए किसी देश का एक कोई साधु है, मुझे पता नहीं कौन है, मैं तो उसको जानता नहीं, वह लिखता है बाबा जी! मैं सोचने लगा कि आदमी में वासना कब आती है अर्थात् इच्छा कब पैदा होती है? वह कहता है बाबा जी! मैं रात को इस ख्याल को लेकर सो गया। स्वप्न में आप आये, वह कहता है मुझे, कि मैं गया, मैंने कहा भई! बच्चा जब पैदा होता है सांस लेता है उस वक़्त वासना उसके अन्दर जाती है। उसकी आंख खुल गई, उसने कहा यह तो स्वप्न था, मैं तो जाग्रत में देखना चाहता हूँ। वह कहता है मैं चारपाई पर टांगें लटका के बैठ गया और उस ख्याल में चला

गया। मुझे यह मालूम हुआ कि मेरे पाँव जो जमीन पर थे वे दो-तीन इंच ऊपर उठ गये, फिर मुझे जिस्म भूल गया। अब एक बड़ा भारा रोशनी का केन्द्र अर्थात् कुर्रा था, उसमें आगे-आगे आप जा रहे थे पीछे-पीछे मैं था। तो मैंने पूछा, महाराज ! यहां क्या आवाद है ? तो आपने कहा, जय शंकर ! आगे मेरा यह ख़्याल था कि *Radiation* जाती है, मुझे तो पता नहीं वह कौन था, यदि मेरी ही *Radiation* होती तो वह जय शंकर कैसे कहती। मैं या राधास्वामी कहता या सत्तनाम कहता या दाता दयाल कहता, जय शंकर मैं कैसे कहता ! यह मर्म है :—

सत्तगुरु प्यारे ने सुनाया मर्म कहानी हो।

मैं हूं सन्त सत्तगुरु, पुकार के कहता हूं, मैं मर्म बता रहा हूँ, राज़ बता रहा हूं, भेद बता रहा हू। क्या ? ऐ इन्सान ! जिस किस्म के तेरे अन्तर दिमाग़ पर *Suggestions & Impressions,* ख़्याल और संस्कार पड़े हुए हैं, जब तू अभ्यास में जाता है,

या स्वप्न या अकेले एकान्त में चला जाता है, तो होता क्या है ? वही जो तेरे *Sub-Conscious mind* में ख़्याल पड़ हुए हैं वही फुरते हैं और तू भूल, भ्रम में आया हुआ यह समझ कर कि शिव शकर आया या फकीर चन्द आया या कोई और गुरु आया, जाके, अपना जायदाद लेकर के अज्ञान में उनके आगे भेंट करता है, तू लुट रहा है। एक !

दूसरे—इस अज्ञान की वजह से इन्सानी नसल भिन्न-भिन्न मजहबों, डेरों व धर्मों में बँट चुकी है जिसका नतीजा, इन्सानी नसल तबाह हो रही है। दिल्ली में हिन्दू-मुसलमान फ़िसाद अभी हुआ, हुआ कि नही हुआ ? फ़िसाद किसने कराया ? इस मर्म को नावाकफ़ियत से, इस हक़ीकत व असलीयत की नाआशनाई की वजह से हिन्दुओं और मुसलमानों के सिर कटे। चूँकि मेरे ज़िम्मे यह *duty* है, कई मुझ अहङ्कारी भी कहते हैं, अरे भई, ! अहंकारी कहते हो, मत आओ मेरे पास, जाओ काम करो ! मैं अहङ्कारी नहीं हूं, मैं सारी हूँ, सार बता रहा हूँ, सार। आगे मेरा यह ख्याल था कि जो जिसका

ध्यान करता है उसको *Radiation* उसके प
होगी। जानते हो ना। जिसका ध्यान किया, उसको *Radiation* गई पहले यह ख़्याल था मेरा, अब तजुर्बा मेरा उसके विरुद्ध हो रहा है। मैं कैसे मानूं कि मेरी *Radiation* उसके अन्दर गई। अच्छा, इसको छोड़ो। तुम्हारा डाक्टर जगजीत सिंह जो यहाँ *Finance Minister* था, वह था *U. K.* में, मुझे तो पता नहीं था, उसने मुझे लिखा बाबा जी! आप आज चार बजे सुबह मेरे कमरे में आ गये तो मैंने अपने सवाल आपके सामने रखे। आपने मुझे कहा कि सिख होमलैंड के लिए खूब काम कर। अब तुम यह बताओ कि क्या मेरे दिमाग़ में यह आ सकता है कि सिख होमलैंड बन जाय? ये मेरी ज़िन्दगी के मर्म हैं।—

सत्गुरु प्यारे ने सुनाया मर्म कहानी हो।

मैं वह मर्म कहानी संसार को सुना रहा हूँ और बुलन्द आवाज़ से कहे जाता हूँ कि वह मर्म, भेद और असलीयत क्या है। वह असलीयत यह है कि ऐ इन्सान! जिस किस्म के तेरे दिमाग़ के अन्तर

Suggestions and Impressions पड़े हुए हैं, जो संस्कार पड़े हुए हैं, जब तुम अभ्यास में जाते हो, स्वप्न में जाते हो, शरीर को भूल जाते हो, वही संस्कार तुम्हारे दिमाग के अन्तर फुरेंगे, चूँकि तुमको इस असलीयत का पता नहीं है, इन बातों को देख-देखकर हमारे लोगों के दिमाग पागल हो गये, हम दौड़ते फिरते हैं कभी किसी के पीछे, कभी किसी के पीछे। तुम कहोगे कि फिर गुरुमत ? गुरु है ! बार-बार लिखा जाता है, सत्तगुरु पूरा, सत्तगुरु पूरा। मैं रोज रेडियो पर सुनता हूं, शाम को साढ़े पांच बजे से छः बजे तक ग्रन्थ साहिब की वाणी का पाठ होता है, वहाँ जितना खेल है सब सत्तगुरु पूरा, सत्तगुरु पूरा, सत्तगुरु पूरा, सत्तगुरु पूरा ! सिख व हर एक आदमी यह समझता है— गुरु नानक साहिब सत्तगुरु पूरा, कोई कहता है ग्रन्थ साहिब सत्तगुरु पूरा, कोई कहता है बाबा सावन सिंह जी सत्तगुरू पूरा, महर्षि जी; साहिब जी महाराज पूरा, अरे बाबा ! सत्तगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का जहाँ से भी किसी को सच्चा ज्ञान मिले, जहाँ से भी किसी को यह सार वस्तु मर्म मिल जाये उसके लिए वही गुरु

है, उसी का एहसान है, एक आदमी से तमाम दुनिया तो फ़ायदा नहीं उठा सकती। तो सत्तगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का मैं वह मर्म बताये जा रहा हूँ संसार को। तुमको जो कुछ मिलता है तुम्हारे उन ख़्यालात, उन जज़्बात का जो तुम्हारे अन्तर हैं उनका फल मिलता है और कुछ नहीं।

आप लोग सत्संग में आ जाते हैं, मैं समझता हूँ कि मैं ऊँचा बोलता हूँ परन्तु मैं अगर नीचा बोलता हूँ तो मैं सत्तगुरु नहीं रह सकता। नीचे बोलूँ तो मैं सत्तगुरु नहीं कहला सकता, नहिं! इसलिए बार-बार कहा जाता है :—

गुरु खोजो री जग में दुर्लभ रतन यही।

तुम उसको गुरु मानते हो जिसके दस हज़ार चेले हैं, जिसकी मानवता मन्दिर में बड़ी-२ कोठियाँ बनी हुई हैं, तब तुम समझते हो कि यह गुरु है। गुरु की तलाश करो, मगर कौन करेगा? किसको चाहिए तलाश करनी? जो अपने घर को जाना चाहता है, जो असलीयत और हक़ीक़त को जानना चाहता

सतासीवें साल में आकर के मैं इस नतीज़े पर पहुँचा हूँ। कभी-कभी सोचा करता था सन्तों का मार्ग मेरे लिए एक बड़ा भारा दुःख का कारण था, इन्होंने इस दुनिया के पैदा करने वाले को बड़ा ज़ालिम कहा है,

है। तो आप लोग आये, आपको एक मर्म बताये देता हूँ कि जो कुछ तुमको मिलेगा तुम्हारी नीयत तुम्हारे अमल, तुम्हारे कर्म का फल मिलेगा। जैस करोगे वैसा भरोगे, एक मर्म तो यह है। तुम बेश मुझ से नाम ले लो, खुदा मियाँ से नाम ले लो, अ तुम्हारे कर्म अच्छे नहीं हैं, कोई गुरु, कोई ईश्व कोई खुदा तुम्हारी मदद नहीं कर सकता। बात।

फिर मैं कई बार सोचता हूँ कि क्या हम कुछ कर्म करते हैं यह हमारे वश में है? यह सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूँ। बार तबीयत फैसला कर देती है, ज़वाब दे मेरी समझ में यह आया। इस सतासी (८७) के तजुर्बे के बाद मैं मर्म बताये जा रहा हूँ,

परन्तु ज़रा-ज़रा से कीड़े यहां पैदा
जाते हैं, डी. डी. टी. छिड़कते हैं, दूसरे जानवर उनको खाते हैं, पत्तों को दूसरे जानवर खाते हैं, उन जानवरों को दूसरे जानवर खाते हैं, यह है क्या ? क्या इन्सान की अक़्ल इसका फैसला कर सकती है ? कितने कर्म को मानोगे ! हमने तो अपना कर्म भोगा, छोटे-छोटे कीड़े और वे कीड़े कैसे ? **Science** ने यह सिद्ध किया है कि इन्सान के वीर्य के अन्दर इतने कीड़े (**Super Matoria Jerms**) हैं, डाक्टरों की राय है कि इस संसार में जितनी औरतें हैं सब एक आदमी के **discharge** से गर्भवती हो सकती हैं, देख लो ! मिट्टी का एक ग्राम ले लो, उसमें पानी मिला दो। 24 घंटे बाद ख़ुर्दबीन से शीशे पर रख के देखो अरबहा कीड़े, उनके घर बने होते हैं। यह दुनिया है

क्या, बताओ ? आदमी का दिमाग़ फेल होता है, किस को बुरा कहूँ, किसको अच्छा कहूँ, तुम ख़ुद ही सोचो ! कहाँ तक कर्म की फिलॉसफी को ले जाओगे ! कोई तरीक़ा है बचने का ? यही तरीक़ा है जो सन्त बताते हैं कि इस काल के राज्य से निकल जाओ मगर निकलना कौन चाहता है, हम लोग निकलना चाहते हैं ? सोचो ! कर्म की फिलॉसफी इतनी ज़बर्दस्त है कि किसी ने इसको पूरी तरह आज दिन तक *Solve* (हल) ही नहीं किया, हो ही नहीं सकता *Solve* (हल) । तो फिर इससे बचने का कोई तरीक़ा है ? मुझे नहीं पता, मेरी समझ में जो आया वह बता सकता हूँ । मैं चला था मालिक को मिलने, जब से मुझे मन के रूप का निश्चयात्मक पता लगा तो मैं उस तलाश के अन्दर अपने मन को छोड़ने की कोशिश करता रहता हूँ, संकल्प-विकल्प सब भूल जाने की कोशिश करता हूँ । जब मैं भूल जाता हूँ तो आगे क्या रह जाता है ? प्रकाश, नूर या शब्द । अब उस चीज़ की तलाश करता हूँ जो चीज़ प्रकाश में रहती हुई, प्रकाश को देखती है, शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है । वह क्या है ? मेरे तो बाप को पता नहीं लगता ।

वह है ! है !! परन्तु क्या है ? पता नहीं। फिर मैं कई बार सोचता हूँ दाता दयाल ने जिस मालिक की स्तुति में शब्द लिखा है, जिसको मैं कहता हूँ कि वह अन्तर में एक ताक़त है :—

मंगलम् अशब्द अरूप शब्दरूप स्वामी।
मंगलम् अलख अनाम अगम नाम नामी ।।

वह चीज़ जिसको मैं कहता हूँ अपने अन्तर में जो शब्द को सुनती है और प्रकाश को देखती है, वह क्या है ? वह अनाम है, अलख और अगम है, उसकी कोई थाह नहीं है।

मंगलम् दीनबन्धु दीनानाथ दाता ।
मंगलम् अभेद भेद आनन्दघन त्राता ।।
महिमा अनन्त आद अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने कौन कह सुनावे ।।
सन्त भेष प्रगट जगत जीव को चिताया ।
काल कर्म फंद काट धुर ले पहुचाया ।।

मैं एक सच्चाई-पसन्द इन्सान हूँ, क्या मैं अपनी आत्मा से पूछने का हक़ नहीं रखता कि तू पहुँच गया धुरपद ? वह जो मालिक है उसको तो वह लिखते हैं कि अकह है, अपार है, अगाध है और

जीव को चिताया और धुरपद पहुचा दिया। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ वह धुरपद क्या है ? मैं वह मर्म बता रहा हूँ कि वह धुरपद क्या है। जब मैं अभ्यास करता हूँ, हर वक़्त तो वह हालत नहीं रहती, चलता-फिरता जब उस चीज़ की तलाश करता हूँ तो फिर मेरे साथ क्या हो जाता है ? मेरे दिमाग़ के अन्तर उस चीज़ की तलाश करते वक़्त न तो दाता दयाल की याद रहती है, न परमात्मा की याद रहती है, न अपनी होश रहती है, न दुनिया रहती है, न कुछ रहता है। एक हालत तारी हो जाती है, जिस हालत में क्या होता है ? हम कहाँ पहुँचे ? जो शख़्स इस तरह साधन करता हुआ इस अवस्था में चला जाता है जहाँ वह सब कुछ भूल जाता है, न उसको अनामी याद है, न उस को स्वामी याद है, न राधास्वामी याद है, न उसको गुरु याद है, न

अनाम है, उस की तो थाह नहीं मिलती ! तो फिर धरपद क्या हुआ ? वह तो कहते हैं अगम, अपार है, [illegible] सकता. कोई कुछ नहीं

उसके अन्तर 'मैं' है न उस के अन्तर 'तू' है, न उसके अन्तर होश है, वह क्या अवस्था है ? वह धुरपद है। जहाँ न 'मैं' न 'तू' और यही बात स्वामी जी महाराज कह रहे हैं :—

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हिरदे तपन करारी।

किसी चीज़ की तलाश करती है रूह, तपन क[illegible] अर्थ है *Desire* (इच्छा) :—

नहिं ख़ालिक मख़लूक न ख़िल्कत।
कर्त्ता कारन काज न दिक्कत॥
दृष्टा दृष्टि नहिं कुछ दरसत।
वाच लक्ष नहिं पद न पदारथ॥

जो कुछ मेरा ज़ाती अनुभव निकला वही स्व[illegible] जी महाराज कह रहे हैं :—

ज़ात सिफ़ात न अव्वल आख़िर।
गुप्त न परघट बातिन ज़ाहिर॥
[illegible] न केशो।

सिमृत, शास्त्र न गीता भागवत।
कथा पुरान न वक्ता कारत।।
सेवक सेव न दास न स्वामी।
नहिं सत्तनाम न नाम अनामी।।

अनामी तक का अभाव भी है। क्यों ? वह जो चीज़ है हमारे अन्तर में जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वही नहीं रहती :—

जो कुछ था सो अब कह भाखूँ।
उन मुन मुन विसमाधा राखूँ।।

यह स्वामी जी कहते हैं। अब मैं सोचता हूँ, तुमको क्या मिला फ़कीर चन्द ? मुझे यह मिला कि मैं ही नहीं ! मैं कौन हूँ ? मैं वह हूँ। इसी वास्ते मैं कई बार कह दिया करता हूँ, मैं अनामी धाम से आया हूँ। मैं ही नहीं आया तुम सब वहीं से आये हुए हो। अनामी धाम क्या है ? पहले **Silence**, उसमें हरकत हुई, जीव-जन्तु बन गये। जीव-जन्तु टूटे, जहाँ से आये थे वहीं चले गये। नहीं समझ में आया ! तो मेरी समझ में इस वक़्त यह आया है, परन्तु मेरी बात को समझने वाले इस वक़्त दुनिया में बहुत कम हैं

हैं क्योंकि मज़हबों का, पन्थों का और वाणियों का बहम है। ज़िन्दगी क्या है? यह उसकी मौज़ है, कहीं साँप बने हुए हैं, कहीं बिच्छू बने हुए हैं, कहीं कीड़े बने हुए हैं, कहीं आदमी, देवता, सूर्य, चाँद बने हुए हैं, कहीं सय्यारे बने हुए हैं, उसमें से प्रकट होते हैं, उसी में समा जाते हैं। हर एक ज़िन्दगी एक ही दफ़ा बनती है फिर उसमें खत्म हो जाती है। दुर्गयाँ! मैं क्या कह रहा हूँ! बहुत मुश्किल है समझना। कोई आवागमन नहीं, यह हमको वहम है। जब तक यह वहम व भ्रम नहीं जाता तब तक आवागमन है, समझ गये मेरी बात को! जब तक यह ज्ञान नहीं होता कि मैं कौन हूँ, लोग तो कहते हैं 'अहं, ब्रह्म', सन्त नहीं कहते 'अहं ब्रह्म' न 'अहं सत्यम्' कहते हैं। वे अपने आप को सुरत रूप समझते हैं, वह एक तत्त्व है। तो इस ज्ञान से मुझे क्या मिला? यह वहम चला गया कि मेरे लिए आवागमन होगा कि नहीं होगा। उसकी मर्ज़ी है, जैसा उसने मेरा शरीर बनाया वैसा मैं काम करता हूँ, मेरे में एक 'मैं' आ गई है, भ्रम आ गया है,

अज्ञान आ गया है, उस अज्ञान की वज़ह से हम समझते हैं मेरा बाप है, मेरा भाई है, मेरा चाचा है, मेरा मज़हब है, मेरा धर्म है। जब यह अवस्था आ जाती है तो फिर क्या हुआ ? वह जो स्वामी जी ने कहा था :—

गुरु ने दीन्हा अब भेद अगम का।
सुरत चली तज देश भरम का।।

तो भ्रम ही था ना ! जो बाबा फ़क़ीर तुम्हारे अन्दर आया, बाबा फ़क़ीर तो है नहीं, तुम भ्रम में हो। तुम्हारे अन्दर कोई दृश्य आ गया, तुम समझते हो वह स्वप्न बड़ा सच्चा है, घबरा गये, अच्छा आया तो खुश हो गये। वह क्या है ? वह भ्रम है और अज्ञान है और यही माया है, इसी में हम फँसे हुए हैं। तो जब तक हमारा भ्रम और अज्ञान नहीं जायेगा यह आवागमन का वहम भी नहीं जायेगा :—

बल पाया अब विरह मर्म का।
भटकन छूटा दहर ओ हरम का।।

विरह का बल पाया अर्थात् तलाश थी, जज़्बा था तलाश करने का, जानने का। वह जो तलाश

का जज़्बा था उसने मुझको यहाँ तक पहुँचाया है :--

वरसन लागा मेघ कर्म का।
संशय भागा जन्म मरण का ।।

अब देखो वह क्या कहते हैं ! कहते हैं संशय भागा जन्म, मरण का । जो चीज़ संशय वाली होती है वह दरअसल में होती नहीं ! हमको शक होता है । इस वास्ते जिनको सन्त सत्तगुरु, सच्चा ज्ञान मिल जाता है, उनके लिए कोई आवागमन नहीं । ज़िन्दगी बनी, जैसी-जैसी प्रकृति थी, किसी के खेल थे, उसने वैसा-वैसा खेल खिलाया, ज़िन्दगी ख़त्म हो गई, न कोई जन्मा न मरा :—

आवे जावे सो माया।
साधो मन नहीं व्यापे काया ।।

कैसा जन्म और कैसा मरण ! जिसको गुरु मिल जाता है, तुमने गुरु के मायने यह समझे हुए हैं, फ़कीर चन्द से नाम ले लो, तुमको गुरु मिल गया, दिवानो ! यह बात नहीं है । गुरु नाम है सत्त ज्ञान का, बाहर में ज्ञान, विवेक और समझ का और अन्दर में शब्द का, मगर यह ज्ञान हर शख्स को

आ नहीं सकता। क्यों? क्योंकि तुम्हारा मन चंचल है, निश्चल नहीं है। इस वास्ते यह सुमिरन, ध्यान, भजन क्यों दिया जाता है कि तुम्हारा मन निश्चल हो जाये, यह मंज़िले मक़सूद नहीं है, कितने ही सत्संगी हैं, सारी उमर अभ्यास में ही मर गये :—

जब तन थिर, मन थिर सुरत निरत थिर होय।
कहे कबीर ता पलक को न पावे कोय॥

यह सुमिरन, ध्यान, भजन जो है यह सिर्फ़ इसलिए है कि तुम्हारे चित्त की वृत्ति, मन, सुरत, आत्मा जो ज़िन्दगी के तुम्हारे खेल हैं, ये स्थिर हो जायेंगे फिर तुमको असलीयत की समझ आयेगी! मेरे स्थिर कैसे हुए? अगर दाता मुझे यह काम न देते मेरे तो फ़लक को भी पता नहीं लगना था कि असलीयत क्या है क्योंकि सन्तों ने सैन-बैन करना था, इशारा किया, इशारा करते थे, इशारे को मैं समझ नहीं सकता था, तो मैं चूँकि बहुत प्रेम करता था, दाता ने मेरी ज़िन्दगी को बनाने के लिए मुझे यह काम दिया था, कहा था फ़क़ीर! तुमको काम देता हूँ तुम न समझना तुम किसी का बेड़ा पार करोगे, तुमको

सच्चे राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और वह आप लोगों द्वारा हुए, आप लोग मेरे सच्चे सत्तगुरु हैं, मैं आप लोगों को नमस्कार करता हूँ, मेरी यही *Duty* है। तुम्हारा अपना विश्वास है तुम मुझे गुरु मानते हो, तुम्हारा अपना विश्वास और तुम्हारी अपनी ही श्रद्धा तुम्हें तारेगी, मैंने तो तारना नहीं। जैसा तुम्हारा ख़्याल है, वैसा तुम्हारा हाल है। मेरी तालीम में नुक़्स भी है, मेरी तालीम *B.A., M.A.* और *Ph. D*, की डिग्रियाँ हैं, आप समझते हो मेरी बात को कि नहीं! मैं छोटी ज़मातों को पढ़ा नहीं सकता, छोटी ज़मातों के लिए एक ही बात है कि नीयत को साफ़ रखो, अपने घरों में रहो, अपनी *Duties* और फ़र्ज़ों (कर्त्तव्यों) को पूरा करो, नेकी किसी के साथ कर सकते हो, कर जाओ और एक मालिक का विश्वास रखो, जिस रूप में तुम्हारी मर्ज़ी चाहे रखो मगर एक में रखो। हम लोग आज देवी के पास मत्था टेकते हैं, कल हनुमान के पास, परसों फ़कीर चन्द के पास, चौथ शिवजी को, पञ्चौथ किसी और देवता को, धोबी का कुत्ता

न घर का न घाट का ! किसी तरफ़ का नहीं रहता :—

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

मेरी अपनी ज़िन्दगी की तो यही बात है। आज शब्द था :—

सत्तगुरु प्यारे ने सुनाया मर्म कहानी हां।

मैंने अपने आप को सन्त सत्तगुरु वक़्त कहा है, मैं अपनी *Duty* समझता हूँ कि वह मर्म कहानी दुनिया को बता जाऊँ, कोई सुने या न सुने, कोई अमल करे या ना करे मुझको उससे कोई मतलब नहीं, मैं तो सिपाही हूँ दाता दयाल का और बाबा सावन सिंह जी ने कहा था, फ़कीर ! निर्भय होके काम कर, जा मैं तेरा संरक्षक रहूंगा, और वह उनकी ताक़त, बाबा सावन सिंह जी और दाता दयाल जी का वह आशीर्वाद जो है वह मेरी रक्षा करता है, मेरी संभाल करता है, मैं अपनी ज़ाती गरज़ के लिए कुछ नहीं कहता, जो मर्म कहानी है, जो मैंने समझी है वह बताता हूँ मगर इस बात का संसार वालो ! मैं

विलकुल दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है। मेरी ज़िन्दगी का तजुर्बा है, अगर दूसरे महात्माओं को, मज़हब वालों को, सन्तों को, फ़कीरों को या गुरुओं को अपना तजुर्बा कहने का हक़ है तो मुझे भी हक़ है कि भई! कि मेरी समझ में यह बात आई है, मैं यह नहीं कहता कि तुम ज़रूर मानो, विलकुल नहीं। मर्म कहानी मैंने आपको बता दी कि दुनिया में रहते हो, तुम्हारे ही कर्म या उस भगवान् की इच्छा समझ लो, मैं तो अब अपने कर्म को भी नहीं समझता, कोई वक़्त था जब मैं अपने कर्म समझता था, अब मेरा तजुर्बा फेल हो रहा है, मैं कहता हूँ अपने वश में है ही कुछ नहीं, यह प्रकृति का खेल है। तुम देखो! मेरे पास यहाँ ज्योतिषी रहता है, और भी कहते हैं कि फ़लाँ ग्रह तुम्हें आ गया भई! यह कुछ होना है, यह ठीक है कि ज्योतिष जो पिछला था वह अपूर्ण है और जो इस वक़्त है वह भी अपूर्ण है। यह रिसर्च है, पहले सात ग्रह होते थे फिर नौ बने, यह जितना भृगुसंहिता ज्योतिष है, यह नौ ग्रहों पर बना, अब तीन ग्रह

और आ गये, प्रोटो, यूरिनिस, एक और है, ये आ गये, अब उनके असरात मार्तण्ड जन्त्री वाला लेता है। ज्योतिषियों ने कहा था भुट्टो चला जायेगा, चीन को भाग जायेगा, ऐसी-ऐसी बातें थीं ! मगर वे ग़लत निकलीं, क्यों ग़लत निकलीं ? क्योंकि मार्तण्ड ने लिखा है कि प्रोटो स्टार जो है वह भुट्टो के पक्ष में है, तकलीफ़ होगी मगर भुट्टो की वह रक्षा करता है। इस वास्ते यह जो कुछ हो रहा है, किसी आदमी को कहने का कोई दावा नहीं कि मैं जो कुछ कहता हूँ यही ठीक है, यह सब उस काल भगवान् की रचना है। इस रचना में हमारा जो *Self* है यह दु:ख-सुख उठाता रहता है, हाय-हाय करता है; रोता है, पीटता है, सत्तगुरु आता है उसको ज्ञान दे देता है। अरे बाबा ! काहे को रोता, पीटता है यह तो इस काल भगवान् की सृष्टि ऐसी है, जिसने मरना है उसने मरना है, जिसने बीमार होना है, उसने बीमार होना है, जिसको घाटा पड़ना है, उसको घाटा पड़ता है वह होना है ! तू इन बातों को छोड़ दे, अपना मालिक जो आद है उसका सुमिरन कर, उसको याद कर। तो आज क्या

निकला ? एक तत्त्व है, जिसको अकालपुरुष कहते हैं, परमतत्त्व कहते हैं, उसमें से हरक़त होती है, शब्द प्रकट होता है, शब्द के साथ सुरत पैदा हो जाती, है। तो जब उसकी मर्ज़ी आये रचना खत्म करेगा, मैं काहे को फ़िक्र करूँ मेरा आवागमन होता है। तुमको भी यह कहता हूँ, आवागमन की फ़िक्र को छोड़ दो, बिलकुल, अपनी *Duty* पूरी किये जाओ जितनी हो सकती है, चिन्ता फ़िक्र, ग़म बिलकुल मत करो, जो होना है वह तो होके रहना है, हाय-हाय करने, रोने-पीटने से तो कुछ बन नहीं जाता है यदि बन जाता है तो बना लो !

होई वही जो राम रचि राखा।

तो यह मर्म कहानी है :—

सत्तगुरु प्यारे ने सुनाया मर्म कहानी हो।
बूझ अबूझ का सार सुझाया, सूझ असूझ की बात बताया।

क्या कहते हैं—पहले सुझा दिया, जब समझ में आ गया तब उसको सत्तपद का पता लगा ! मेरी समझ में नहीं आता था, मैं तो दाता दयाल

के जिस्म को ही जफ्फा मारे बैठा था, नहीं समझ में आती है ! इसी वास्ते मैं कहता हूँ जो शख्स सारी ज़िन्दगी किसी भी अपने गुरु की देह को ही जफ्फा मारे बैठे हैं, वे इस मन के चक्कर से नहीं निकल सकते ! नहीं निकल सकते !! नहीं निकल सकते !!! यह मैं क्यों कहता हूँ ? जो लोग मुझे गुरु मानते हैं, मैं अपनी *Duty* समझता हूँ, उनको मर्म बता जाऊँ। यह दुर्गादास है, तुम लोग हो, बहुत से आदमी हैं जो मुझे गुरु मानते हैं, मेरे दिल में भी कोई *Duty* है ? कोई फर्ज़ है ? तो जब तक कोई आदमी पहले इस समझ को लेकर के प्रकाश और शब्द में जाय। प्रकाश और शब्द का मार्ग सत्तपद है और इससे आगे फिर राधास्वामी धाम है। राधास्वामी धाम या निज-धाम वह है। जिसका मैंने अभी ज़िक्र किया है कि :—

नहिं खालिक मखलूक न खिल्कत।
कर्त्ता कारन काज न दिक्कत॥

यह मज़हवों के टैक्नीकल लफ्ज़ हैं, किसी ने उसको किसी तरह से ब्यान किया, किसी ने उसको किसी तरह से ब्यान किया :—

तत्तपद का भेद लखा, मिल गया पद निरवानो हो।

अब मैं कई दफ़ा सोचता हूँ दुर्गादास ! तुम मेरे प्रेमी हो, पद निर्वाण क्या है ? यह तो उनको पता होगा जिन्होंने निर्वाण का लफ्ज़ घढ़ा, मुझे क्या पता। निर्वाण कहते हैं फूँक मार के उड़ा देने को। तो जितने मेरे अन्दर में ख्यालात विचार व भाव उठते थे उनको फूँक मारकर किसने उड़ाया ? ज्ञान ने। किस ज्ञान ने ? मन, माया के रूप के निश्चयात्मक ज्ञान ने। जो बात दाता दयाल से मैं न समझ सका वह राज़ मैंने तुम लोगों से समझा है। मैं खूब जानता हूँ मेरी इस साफ़ब्यानी से मुझे पैसा कोई नहीं देगा, इसको खूब जानता हूँ। पर्दा रखता तो आज मैं लाखों और करोड़ों रुपयों का मालिक होता, जितने मर्ज़ी चाहे मैं डेरे बना जाता। दुनिया है ! सब्ज़बाग़ दिखाओ !! लूट लो दुनिया को !!! सच्ची बात कहो कोई नज़दीक नहीं आता :—

साँची बात कबीरा कहें, सब के मन से उतरे रहें।

यह सच्चाई जो मैंने ब्यान की है किसी सन्त ने सिवाय किसी खास चेले के किसी को नहीं बताई,

नांहि। कबीर साहिब ने धर्मदास को बताकर उसके मुँह में गुल्ला ठोंक दिया :—

धर्मदास तोहे लाख दोहाई।
सार भेद नहिं बाहर उाई॥

राधास्वामी दयाल ने अपनी वाणी में लिख दिया :—

पिया को खोजो री निज घट में।
पिया मिले किसी साध समग में॥

तो मुझे पिया मिला तुम्हारी संगत में। फिर वह कहते हैं :—

सन्त विना कोई भेद न जाने।
वह कहें तोहे अलग में॥

यह पिछला वक़्त था। कबीर साहिब ने भी यही कहा है :—

साईं आगे साँच हो, साईं साँच सोहाय।
भावें लम्बे केस कर, भावें घोट मुंडाय॥
साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदल आप॥

साँच है मेरे अन्तर में, मेरे अन्तर में मालिक रहता है, मैं मालिक का रूप हूँ क्योंकि मेरे अन्तर में सच्चाई है, कोई हेरा-फेरी, फरेब, धोखा नहीं :—

साँचे कोई न पतियाई झूठे जग पतियाय।
गली गली गोरस फिरे मदिरा बैठ बिकाय।

अब तुम देखो कबीर साहिब ने क्या कहा है ! मैं सच्चाई ब्यान करता हूँ, यहाँ कौन आता है ! कौन देता है ! कौन सेवा करता है ! और यहाँ तुम लोगों की आँखों में मिट्टी डाली जाती है, हाँ ! नाम ले जाओ, हम तुमको अन्त समय में सत्तलोक ले जायेंगे !! आप नहीं कहेंगे तो चेलों से कहलवायेंगे, वहाँ धड़ाधड़ रुपया बरसता है, लाखों आदमी ज़ाते हैं। हरिद्वार मैं क्या होता है ? कुम्भ पर क्या हुआ ? देवियों के हाँ क्या होता है, आनन्दपुर में क्या हो रहा है ! साँच की कोई कदर है। कबीर साहिब ने सच कहा है परन्तु मैं मज़बूर हूँ क्योंकि मैं हूँ सन्त सत्तगुरु वक़्त, सत्तज्ञान दिये जाता हूँ। क्यों दिये जाता हूँ :—

सच कहूँ तो मारसी यह तुरकानी ज़ोर।
बात कहूँ परलोक की कर गह पकड़े चोर ।।

अब देखो ! कबीर साहिब कहते हैं यह तुर्कों का राज्य है, मैं यदि साँच कहता हूँ परलोक की बात कहता हूँ तो ये मुझे मारेंगे, झूठ ही क्या है इसमें । मैंने इस साँच को क्यों ज़ाहिर किया है, यह एक सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूँ । मेरे ज़िम्मे *Duty* है :—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही ।
जग कल्याण जगत् में आया, परम दयाल स्नेही ।।

यह मैं राज़ इसलिए खोले जा रहा हूँ कि अब अपना राज्य है, हमारी भारतवासियों की अपनी हकूमत है । अगर यह राज़ दुनिया को पता लग जाय कि सच्चाई यह है तो हमारा मज़हबी झगड़ा जितना है सब खत्म हो सकता है, हम इन्सान बनके रह सकते हैं । ख़्याल की फिलासफी को बता दिया, जैसा करोगे वैसा भरोगे, हमेशा मैं कहा करता हूँ । अब क्या हो रहा है देश में, सोचो तो सही ज़रा ! ये जितने *Strike* करने वाले हैं, चारसौबीस करने वाले हैं, इनके कर्म के फल से ये जायेंगे कहाँ ! मैं कहा करता हूँ जो सरकार की *Property* (जायदाद) को

हज़म करता है वह 55 करोड़ हिन्दुस्तानियों के माल की चोरी करता है। उसका एक जुर्म 55 करोड़ गुणा होगा, वह बच नहीं सकता। जो लोग *Strike* करते हैं, इस किस्म के आदमी मेरे सत्संग में मत आया करो, नांहि ! अब ज़माना बदल गया, क्योंकि मैं सन्त सत्तगुरु वक़्त हूँ, दाता ने मुझे बनाया हुआ है इसलिए मैं अपनी *Duty* पूरी किये देता हूँ कि इस वक़्त में यह सच्चाई है, तुम किसी को धोखा दोगे, दुःख मिलेगा, किसी को सुख दोगे, सुख मिलेगा, हेरा-फेरी करोगे, तुम बच नहीं सकते। हमारे जितने दुःख हैं, मुसीबतें हैं ये क्यों हैं ? हमने जो कर्म किये हैं, उसका फल है, कर्म फिलासफी के अनुसार। इसलिए मैंने इस सच्चाई को प्रकट कर दिया :—

झूठे को झूठा मिले, अधिका वढ़े स्नेह।
झूठे को साँचा मिले, तबही टूटे नेह ।।

मैं हूँ नां, कई दूसरी गद्दियों वाले या दूसरे मज़हब वाले जो पक्षपाती हैं, जो झूठे पाखण्ड के जाल में फँसे हुए हैं वे मेरे साथ प्रेम कर सकते हैं ? वे नहीं कर सकते, नांहि ! मेरे पास तो वह आयेगा जो

सत्यप्रिय है, जो हक़ीक़त और असलीयत (सच्चाई और वास्तविकता) के जानने का इच्छुक है वह मेरी संगत में आयेगा, और दुनिया कैसे आ सकती है :—

फकीर ! लज्जा लोक की बोले नाहिं साँच ।
जान बूझ कंचन करे क्यों तू पकड़े काँच ।।

मैंने शुरू से काम ही सच्चाई से शुरू किया दुर्गादास ! पहला मज़मून जो मैंने निकाला उस में यही लिखा कि सत्तगुरु वह है जो इन्सान के दिमाग़ से गुरु के भाव को भी मिटा देता है, गुरु नानक साहिब की वाणी है :—

घर में घर दिखलाय दे, सो सत्तगुरु पुरुष सुजान ।
पाँच शब्द धुनकार धुन, बाजे शब्द निशान ।।

गुरु वह है जो इन्सान को बहिर्मुखता से हटाकर उसको अन्तर्मुखी कर दे । तुम लोग मेरे साथ प्रेम करते हो, मुझे यह ख़्वाहिश नहीं है कि तुम हर महीने आते रहो । मेरी बात, दो चार सत्संग ही सुन जाओ; यदि मेरी बात तुम्हारी समझ में आ गई है, तुमको मेरे पास बार-बार आने की क्या ज़रूरत है ।

हाँ ! एक बात है, मां ने बच्चे को पैदा किया, पाला, पढ़ाया, जब वह जवान हो गया तो लड़के का अब क्या फ़र्ज़ है कि जब तक उसकी मां ज़िन्दा है वह उसकी इज़्ज़त करे, उसका मान करे, उसकी सेवा करे उसकी ख़िदमत करे। ऐसे ही कबीर साहिब कहते हैं :—

कामी तरे क्रोधी तरे पापी तरे अनन्त।
आन उपासक कृतघ्न तरे न नाम रटन्त ।।

कबीर साहिब कहते हैं कि कामी का उद्धार है क्रोधी का, पापी भी पार जा सकता है परन्तु जो ग़ैर की इबादत (पूजा) करने वाला है, जो गुरु को यह समझता है कि होशियारपुर में रहता है या ब्यास में रहता है वह ग़ैर की इबादत करता है। आन उपासक अर्थात् दूसरे की उपासना करने वाला और कृतघ्न अर्थात् बेशुक्रा यह बेशक नाम जपता रहे यह नहीं तर सकता। इसलिए मैं कहता हूँ, ऐ बच्चो ! तुम्हारे मां बाप ने तुमको पाला, तुम्हारी ख़िदमत की, तुम अगर जवान होके मां बाप की बेक़दरी करते हो, उनकी इज़्ज़त और मान नहीं करते तुम लाख बाबा फ़क़ीर के चेले बन जाओ

तुम्हारा कल्याण नहीं है, क्योंकि तुम कृतघ्न हो, बात सच्ची कहता हूँ। किसी आदमी ने तुम पर एहसान किया हुआ है तुम उसके एहसान को भूल जाते हो, उसी के विरुद्ध होते हो, तुम कृतघ्न हो। गुरु के सत्संग में तुम गये, तुम को ज्ञान मिला फिर तुम मुख़ालिफ़ (विरुद्ध) हो गये तुम कृतघ्न हो। मैं कृतघ्न नहीं हूँ, मुझे यह ज्ञान तुम लोगों से मिला, दाता के भी गुण गाता हूँ और तुम लोगों के भी गुण गाता हूँ, तुम लोगों की सेवा और ख़िदमत करता हूँ, तुम लोगों को प्यार करता हूँ, मैं कृतघ्न नहीं हूँ। इस वास्ते आदमी को कृतघ्न नहीं होना चाहिए, दुनिया की ज़िन्दगी में भी। और बात समझ में आ गई फिर तुम कहो अब गुरु की क्या ज़रूरत है, तुम दिवाने हो। तो फिर क्या काम है शिष्य का? गुरु की तालीम को फैलाओ, गुरु ने तुमको प्रकट किया तुम गुरु को प्रकट करो। तुम तो गुरु को फ़क़ीर चन्द समझते हो दिवानो! यह नहीं! गुरु नाम है ज्ञान का, तुम्हारी *Duty* है ज्ञान से दूसरों को फ़ायदा पहुँचाओ, यह है सार बात :–

साधु ऐसा चाहिए साँची कहे बनाय ।
कै टुटे कि फिर जुड़े, बिन कहे भ्रम ना जाय ।।

मैं साधु हूँ, मुझे दाता दयाल ने फ़कीर बनाया है, मैं बात साफ़ कहता हूँ, जब तक सफ़ाई से बात नहीं करूंगा तुम लोगों के भ्रम नहीं जायेंगे, वहम नहीं जायेंगे ! मगर तुम लोग भ्रम गंवाने के लिए तो नहीं आते, तुम शंका निवारण करने के लिए नहीं आते ! नांहि । तुम लोग तो अपनी दुनिया के चक्कर के लिए आते हो । अच्छा भाई ! दुनिया के चक्कर के लिए आये तो तुमको मैंने बता दिया, एक जगह विश्वास रखो । सच्चे दिल से मांगा करो तुमको मिलेगा, देने वाला तुम्हारे पास रहता है, होशियापुर नहीं रहता, मेरे तजुर्बे में यह आया है, मेरी तो आंख खुल गई । ऐसे-ऐसे केस मेरे पास आते हैं कि जिसका कोई हिसाब नहीं, मेरे पाँव से मिट्टी निकल जाती है । तो मुझे तुम लोगों से यक़ीन हो गया कि देने वाला हर वक़्त तुम्हारे साथ रहता है, बाहर नहीं रहता :—

साँचे शाप न लागै साँचे काल न खाय ।
साँचे को साँचा मिले, साँचे माहिं समाय ।।
जाको साँची सुरत है ताका साँचा खेल ।

मेरी साँची सुरत है, मेरा जितना खेल है सब साँच पर आधारित है, इसको मैं जानता हूँ। मैं साफ़ कहता हूँ ट्रस्ट वालों को, ट्रस्ट वालो! न काम चले बन्द कर देना, बस! स्टैच्यू को दाता दयाल की समाधि पर भेज देना, स्कूल उनका है, जगह बनी हुई है किसी संस्था के काम आ जायेगी, मुझसे हेरा-फेरी नहीं होती, मेरी ताक़त में नहीं है कि बात को हेरफेर के कहूँ :—

साँच बिना सुमिरन नहीं, भय बिन भक्ति न होय।
पारस में पर्दा रहे, कंचन केह विधि होय।।

तो मैं हमेशा कहा करता हूँ भई! तुम्हारा मन गन्दा है, ठीक है तुमसे कुछ नहीं होता, बहुत अच्छा! कुछ नहीं करो, सिर्फ घण्टा-आध 2 घण्टा जब सुबह बैठते हो, कुछ तुमसे नहीं होता, सच्चे मन से अपने आप को उस मालिक, उस ज़ात के सपुर्द किया करो। उसका तो कोई रूप नहीं, सब रूप उसके हैं, जहाँ तुम्हारा विश्वास है, जहाँ से तुमने नाम लिया हुआ है, सच्चा मान के, उसको मालिक मान के समझ, अगर तुम गुरु को फ़कीर चन्द या कोई और गुरु

समझते रहोगे तो तुम्हारा उद्धार नहीं होगा ! नहीं होगा !! नहीं होगा !!!

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध ।
दुखी होयं संसार में, आगे यम का फन्द ।।

मैं सन् 1942 में बाबा सावन सिंह जी के दरबार में व्यास स्टेशन से नंगे पाँव धूप में गया था। मुझको उलझन थी, मैंने सत्संग कराना था, मैंने कहा मैंने तो सच कहना है, दुनिया मेरी मुख़ालिफ़ हो जायगी। तो मैं जब बाबा सावन सिंह जी के दरबार में बैठा हुआ था, वह कुर्सी पर बैठे हुए थे, मैं ज़मीन पर था, मुझे बाबा सावन सिंह जी नहीं नज़र आते थे, दाता दयाल नज़र आते थे। तो मैंने सच्चा होकर के अपने दिल की सारी हालत उनको ब्यान कर दी और जो कुछ उन्होंने मुझे ज़वाब दिया, मेरे लिए फ़ायदेमंद हुआ। तुम में सच्चाई है, तुम सच्चे हो, गुरु तुम्हारा अगर ग़लत भी है, कामी भी है, क्रोधी भी है, लोभी भी है, पाखण्डी भी है, तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा, यह मुझसे लिखा लो, क्योंकि तुमको जो कुछ मिलना है तुम्हारे

अपने ही विश्वास और श्रद्धा का फल मिलना है। समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा! स्वामी जी ने भी यही बात कही है, मुझे याद है स्वामी जी का एक शब्द था, शब्द मुझे याद नहीं आता, वह कहते हैं कि तुम गुरु के पास चले जाओ, वह अगर पाखण्डी भी है, भेषी भी है, तुम अगर सच्चे दिल से उसकी सेवा व उसकी ख़िदमत करोगे तो क्या होगा ? सत्तगुरु तुमको अपने आप मिल जायगा, यह स्वामी जी महाराज ने साफ़ लफ़्ज़ों में लिखा हुआ है। देखो ना ! एक औरत है उसमें हज़ार ऐब हैं, जब लड़का उसको देखेगा, मातृभाव से उसको प्रेम और श्रद्धा आयेगी, पति उसको देखेगा उसका और मन होगा, भाई देखेगा उसका और मन होगा, कोई यार होगा उसका वह उसको देखेगा उसका और मन होगा, तो जो कुछ किसी को मिला वह उसके अपने भाव से मिला कि न मिला ? तो तुम लोग मेरे पास आते हो, मैं तुम लोगों को अपनी नीयत से धोखा नहीं देना चाहता। यदि आप समझते हैं मैं ग़लत कहता हूँ, मेरे पास मत आया

करो, मैं बुलाने तो नहीं जाता आपको, 'आ बैल मुझे मार'! मैं आपको सच्चाई ब्यान किये देता हूँ :—

अब तो हम कंचन भये, तब हम होते काँच।
सत्तगुरु की कृपा भई, मन में उपजा साँच॥
प्रेम प्रतीत का चोलना, पहन कबीरा नाच।
तन मन ता पर वारहूँ, जो कोई बोले साँच॥

तो आज दाता दयाल का शब्द था :—

सत्तगुरु प्यारे ने सुनाया, मर्म कहानी हो।

तो मैंने भाई! मर्म कहानी आपको सुना दी, राज़ और *Secref* बता दिया कि असलीयत यह है, तुम जिस अवस्था में हो, कुछ न करो, सिर्फ़ अपनी नीयत को साफ़ रखके उस सच्चे मालिक की जो तुम्हारे अन्तर रहता है, वहाँ प्रार्थना किया करो, बस! अगर ऐंब हैं तो अपने मन के ऐबों को समझ करके दाता या सत्तगुरु या मालिक या राम, जो कुछ जिसको मानते हो उससे प्रार्थना किया करो कि तुम्हारे ऐब चले जायेंगे। अगर तुम सच्चे दिल से चाहोगे, अपने आप चले जायें। माँगो और मिलेगा, तुम्हारे दिल की सच्चाई की ज़रूरत है :—

बूझ अबूझ का सार सुझाया, सूझ असूझ की बात बताया।
तब सत्त पद का भेद लखाया, मिल गया पद निरवानी हो ।।

यह निर्वाण क्या है ? फूँक मार देना। बस ! एक तुम सत्संगियों की बदौलत मन माया के रूप का पता लगने से मुझे इस निर्वाण का पता लगा :—

सुरत शब्द की राह दिखाई, सन्त पन्थ की डगर चलाई।
सहज ही अब अपनी बन आई, हो गये ठौर ठिकानी हो ।।

ठौर ठिकाने कैसे ? मैंने तुमको समझा दिया कि बाहर कुछ नहीं। अब तुम उस चीज़ को हासिल करने के लिए होशियारपुर दौड़ते हो, कोई कहीं जाता है, कोई कहीं जाता है, जब तुमको मर्म मिल जायगा फिर होशियारपुर या ब्यास दौड़ने की कोई ज़रूरत नहीं, तुम्हारे अन्तर में ठौर-ठिकाना मिल गया, कि जो कुछ है तुम्हारे अन्तर में है। कैसे यह ? मैं जब दाता को कभी कहा करता था तो कहते, फ़कीरा ! सत्संग के लिए अब तुमको मेरे पास आने की ज़रूरत नहीं, यह लिखा करते थे व्यवहार के लिए आ सकते हो। हम दुनिया में रहते हैं, हमारा व्यवहार है इसलिए लेना-देना सब कुछ होता है,

व्यवहार के लिए जाओ। बात समझ में आ गई, पीछे से एहसान है, सत्तगुरु चेला एक होते हैं। चेले को ज्ञान हो जाता है फिर गुरु उसको चेला नहीं समझता, चेला अपनी एहसानफ़रामोशी की बजाय, जाता है, सेवा करता है, प्रेम करता है, इज्ज़त करता है, मान करता है, धन देता है, काम करता है, डेरे में काम करता है या मन्दिर में काम करता है, यह कोई बात नहीं, परमार्थ के लिए फिर कोई जरूरत नहीं, ठौर-ठिकाना मिल गया कि असली बात यह है, यहाँ हम ने ठहरना है अपने अन्तर में :—

जीव ब्रह्म का रूप पिछाना, उपजा हृदय सत्तमत ज्ञाना।
घट का मिटा तिमिर अज्ञाना, पाई अगम निशानी हो ॥

यह तो दाता दयाल को पता होगा कि जीव ब्रह्म का रूप क्या है, मैं क्या समझता हूँ ? ब्रह्म है प्रकाश। ब्रह् अर्थात् बढ़ना, मनन अर्थात् सोचना। इस दुनिया के अन्तर जितनी रचना है सब प्रकाश की है। देखो! बत्ती जल रही है, अपनी रोशनी बाहर फेंक रही है, तो रोशनी जो काल पुरुष है अर्थात् प्रकाश रूप है, जो गुरु के चरण हैं उसमें से

धारें निकलती रहती हैं, जब वे धारें शरीर में आ जाती हैं तो उसमें मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार बन जाता है। तो जीव का रूप क्या है? मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार की शक्ल का होना जीव-पना है। तो यह ज्ञान हो जाता है, फिर वह ब्रह्म और जीव के झगड़े में नहीं पड़ता कि ब्रह्म क्या है जीव क्या है ब्रह्म क्या है, जीव क्या है :—

अहंकार मद लोभ त्यागा, क्रोध मोह का टूटा धागा।
सोया भाग्य आप अब जागा, छूटी आनी जानी हो॥

आना, जाना क्या है? हमारी सुरत का मन के ख़्यालों के पीछे जाना, आना है, हमारी सुरत का मन के ख़्यालात और विचारों को सत्य मान के उसके पीछे दौड़ना, आना है, इसको छोड़ देना, जाना! तो जब जिसको ज्ञान हो जाता है कि यह तो भई! मन का खेल है, माया है, उसके लिए फिर आना, जाना कैसा! वह दुनिया में जीवन्मुक्त अवस्था में रहता है, जब तक शरीर है मन *function* (कार्य) करेगा, तो वह चिन्ता नहीं करता, फ़िक्र नहीं करता, हाय-हाय नहीं करता, रोता नहीं, इस हालत का नाम **जीवन्मुक्त अवस्था है :—**

सहसकंवलगढ़ सुरत से तोड़ा, त्रिकुटी ब्रह्म से नाता जोड़ा।
ब्रह्म गुफा माया मद फोड़ा.राधास्वामी धाम लखानी हो ।।

यह! सुनने वाली बात है। अब वह, जब तक यह ज्ञान होता, ये मन के जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं, इनका सम्बन्ध किससे है ? हमारे मन से है ना! तो जिसको यह ज्ञान हो जाता है कि यह मन जो है यह माया है फिर वह उसके चक्कर में फँसता नहीं, और कोई बड़ी बात नहीं !

तो आप लोग आ गये, मैंने आज मर्म कहानी आपको बता दी, मैं ऊँचा बोला हूँ इसको, मैं जानता हूँ। अब दुनियादारों के लिए दो-चार शब्द कह देता हूँ वह यह है कि तुम दुनिया में रहते हुए कुछ न करो, केवल नीयत को साफ़ रखो। अपनी ज़ाती ग़रज़ के लिए किसी दूसरे का नुक्सान करने की इच्छा मत करो, बस! दुनिया में रहने का केवल एक ही तरीक़ा है, (अपनी ज़ाती गरज़ के लिए, अपनी !) और कुछ नहीं। घर वाले हैं, उनकी तुमने सेवा करनी है, करो, अगर तुम्हारी नीयत साफ़ है, दाता ने हर शख़्स का कुछ न कुछ बन्दोबस्त पहले ही किया हुआ है। याद रख लेना, कोई किसी की

मदद नहीं करता, क़ुदरत ने पहले ही कोई न कोई इन्तज़ाम किया हुआ है, हमको तो केवल यश मिलना है, *Credit* मिलना है। ज़ो कुछ किसी को मिलना होता है वह उसके कर्मों के अनुसार ऐसी जगह चला जाता है जहाँ उसका काम बन जाता है। दानी बड़ा कि भिखारी ? भिखारी बड़ा है। अगर भिखारी न होता तो दानी को दान देने का मौक़ा कहाँ मिलता ! समझते हो मेरी बात को कि नहीं ! मैं एक 'बार बग़दाद जा रहा था, रास्ते में यार-दोस्त थे। वहाँ दुनिया का ज़िक़ आया। मैंने कहा इन चोरों, ठगों और डाकुओं की वज़ह से पुलिस का महक़मा है। लाखों पुलिस के आदमी दुनिया में हैं, सब इन चोरों की बदौलत और डाकुओं की बदौलत रोटी खाते हैं। ठीक है कि नहीं है ? अगर ये न हों तो उनको रोटी कौन दे। तो दुनिया में कोई बुरा नहीं है, कोई अच्छा नहीं है। जब यह ज्ञान हो जाता है तब इन्सान को शान्ति मिल जाती है फिर भटका नहीं खाता। मैं अभी तक भटका खाता हूँ, क्यों ? यह मेरी अपनी ही वासना है, अपना ही कर्म है कि

जो कुछ मेरा अनुभव होगा, बता जाऊंगा। तो आप लोग आये हैं जो कुछ मैंने समझा वह बता दिया। हो सकता है दोस्तो ! जो कुछ मैंने समझा हो सारा ग़लत हो, मैं कान को हाथ लगाता हूँ, मुझे कोई अफ़सोस नहीं है, नीयत मेरी साफ़ है। दाता ने कहा था तालीम को बदल जाना, उन्होंने यह नहीं कहा तूने क्या कहना है। उन्होंने इतना कहा, फ़क़ीर ! चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना, ज़माना बदल जायेगा, सो मैं तालीम को बदल रहा हूँ। भारतवर्ष के लिए सन्देश दिये जाता हूँ कि "इन्सान बनो।"

सत्संग परम सन्त हजूर मानव दयाल डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

25-12-82

तारने वाले ने तारा, तर गये सब तर गये ।
जिसको तरना था तरे, भवनिधि के वह तट पर गये ।।
लालची कामी तरे, क्रोधी तरे, मोही तरे ।
नीची योनी में जो थे, वह नाम ले ऊपर गये ।।
तारने वाले ने तारा, तार तरने का बंधा ।
अब हो क्या चिन्ता किसी को, उसके जो दर पर गये ।।
आये शरनागत जो उसके, कर लिया जीवन सुफल ।
अब नहीं तरने में संशय, काम अपना कर गये ।।
राधास्वामी ने दया की, लाये नौका शब्द की ।
जो चढ़े वह तर चले, चूके जो वह सब मर गये ।।

राधास्वामी !

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

—

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं, तस्मै श्री गुरवे नम ।।

मेरी अपनी ही आत्मा के साक्षात् स्वरूप, प्यारे सत्संगी भाइयो और बहनो ! आज महाराज जी के टेपरिकार्ड किये हुए सत्संग के वचनों में जो सुने गये उनमें नाम की बात, ध्यान की बात और गुरु की बात हो रही थी। 'ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः' सुमिरन ध्यान और भजन-सुमिरन नाम का, ध्यान गुरु का और भजन उस परमतत्त्व का या वह आवाज़, वह शब्द जिसे शब्द ब्रह्म भी कहा है, जो प्रकाश का भी आधार है उसका। प्रकाश को गुरु के चरण कहा जाता है, प्रकाश से ही सारी सृष्टि, चर-अचर अर्थात् वह सृष्टि जो नाशवान् है और वह सृष्टि जिसका नाश नहीं होता (वह सृष्टि है) ये दोनों प्रकाश से बनती हैं, प्रकाश को इसीलिए चरण कहा गया है। पाँच तत्त्व और मन, बुद्धि, अहंकार ये आठ, नाशवान्

प्रकृति मानी जाती है। इसको अपरा प्रकृति कहते हैं :—

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।

ये आठ हैं, इसको अपरा प्रकृति, नाश होने वाली प्रकृति कहा गया है। दूसरी प्रकृति है परा प्रकृति :—

जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।

वह आत्मिक जीवों की सृष्टि है, जो हम हैं, जो बिन्दु हैं सिन्धु से, उसको परा प्रकृति कहा है, उसका नाश नहीं है, जिसके आधार पर यह सारा चलायमान जगत् चल रहा है।

खम् अर्थात् आकाश जो हमें दिखाई देता है, सारे जगत् के अन्दर जो कुछ भी घटित होता है उसके अन्दर अंकित होता जाता है, आकाश तत्त्व है जैसे पृथ्वी तत्व है। पृथ्वी तत्त्व शरीर में प्रधान होता है लेकिन पृथ्वी तत्त्व के साथ-साथ जल तत्त्व भी है बल्कि हमारे शरीर के अन्दर जल ज़्यादा है और उसके साथ वायु तत्त्व है। इन पाँचों के गुण हैं। पृथ्वी का गुण है अच्छी या बुरी गन्ध देना जो पृथ्वी के कण होते हैं उन्हीं से गन्ध होती है, इसलिए पांच तत्त्वों से सम्बन्धित

पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है। नासिका जो है वह पृथ्वी की ज्ञान इन्द्रिय है। आपो, पानी जो है, पानी का गुण है आपको रस देना, *Sliva* मुँह के अन्दर आता है तब रस मिलता है। पानी की ज्ञानेन्द्रिय जो है वह हमारी ज़बान है। अनिलो, अनिल कहते हैं वायु को। वायु, हवा, जो चलती है उसका क्या गुण होता है? 'स्पर्शवान् वायु:'। हमें स्पर्श, *Touch* , जो हम छूते हैं, छूने का जो असर होता है वह वायु के कारण मालूम होता है। और इसी तरह से अनल (अग्नि), अग्नि का काम है ज्योति। ज्योति से हम देखते हैं, नेत्र का उसका सम्बन्ध है। पाँचवीं है खम्, आकाश। आकाश क्या है? आकाश के अन्दर ईथर के गुण हैं। ईथर का क्या गुण है? शब्द। जो शब्द हम सुनते हैं यह शब्द स्थूल शब्द होता है और यह स्थूल शब्द आकाश का गुण है। रेडियो और टैलीविज़न जो हैं ये इसी आधार पर हैं कि शब्द की किरणें हैं जो आप *Short waves, long waves* (छोटी लहरें और बड़ी लहरें) रेडियो के अन्दर सुनते हैं ये चीज़ें जो हैं यह आजकल के आधुनिक युग का विज्ञान है। एक बात बताना चाहता हूँ कि चन्द

दिन हुए मैं ग़लती से एक *Movi* देखने चला गया परन्तु कभी ग़लती ठीक होती है। जयपुर मैं गया था, वहाँ एक सिनेमा घर बना है। कहते हैं कि एशिया में यह सबसे सुन्दर और बड़ा अच्छा भवन है, 'राज मन्दिर' उसका नाम है। उसके जो मालिक हैं वह कहने लगे कि आप जाके ज़रूर देखो, बहुत सुन्दर है। भौतिक दृष्टि से ठीक है, मैं गया और कई सालों के बाद वहाँ *Picture* देखी। लेकिन उसके देखने से ग़लती नहीं हुई बल्कि मैंने यह अनुभव किया कि जो काम, जो हानि, जो हमारी संस्कृति की जड़ को काटने का प्रयास दो सौ साल में अंग्रेज नहीं कर सके वह पैंतीस साल के अपने राज्य ने पूरा कर दिया। अगर यह सिनेमा, जैसे कि चल रहे हैं चलते रहे तो हमारी संस्कृति का नाश हो जायेगा। हालाँकि यह नाश लार्ड मकाले नहीं कर सका। लार्ड मकाले एक वायसराय था, उसने अपने *Secretary of state* को इंग्लैंड के अन्दर एक चिट्ठी लिखी थी जिसमें उसने कहा था कि मैं इन भारत वालों को अंग्रेजी की शिक्षा दे करके इनकी संस्कृति की जड़

काट दूंगा। वह तो नहीं काट सके परन्तु हम खुद काट रहे हैं।

पत्रकार महोदय ! यह क्या हो रहा है सिनेमाओं के अन्दर !! कमाल हो गया। मैं तो पाँच साल के बाद में आया, सिनेमा के अन्दर कोई हमारी सभ्यता की बात नहीं बल्कि हमारी सभ्यता को काटने की बातें हैं। नकल और इतनी गन्दी नकल ! सच्चाई की नकल नहीं है। पापा और मम्मी के सिवाय बात नहीं होती। अपनी भाषा ही जैसे हमारी न हो। महात्मा गांधी ने एक दफ़े कहा था कि उसके घर से अंग्रेज़ी भाषा में कोई चिट्ठी आई थी तो उसके एक अंग्रेज दोस्त ने कहा कि क्या तुम्हारी कोई भाषा ही नहीं है जो अंग्रेजी भाषा में चिट्ठी आती है ? हम अंग्रेजी बोलने के बहुत शौक़ीन हैं और अंग्रेजी बोलने वाले समझते हैं कि हम सबसे ऊँचे हैं जबकि इग्लैंड के पास है फ्रांस, छब्बीस मील का फ़र्क है, सिर्फ़ छब्बीस मील का, आप फ्रांस चले जाइये, छब्बीस मील के बाद एक शब्द अंग्रेज़ी का नहीं सुनोगे आप। जानते हैं फ्रांस वाले अंग्रेज़ी लेकिन वे अंग्रेज़ी बोलते

नहीं हैं ! क्योंकि वे कहते हैं कि हमारी संस्कृति नहीं है अंग्रेजी भाषा। क्या चीन अंग्रेजी भाषा पढ़ता है ? क्या रूस ने अंग्रेजी भाषा पढ़के तरक़्क़ी की ? नक़ल और बड़ी बुरी नक़ल हो रही है ! असल तो है नहीं !! तो यह जो हमारी संस्कृति की दुर्गति हो गई है और हम ख़ुद अपनी संस्कृति को जानते नहीं हैं और उनका अन्धाधुन्ध अनुकरण कर रहे हैं, यह बात मैंने सिनेमा के अन्दर देखी तो बहुत दुःख हुआ।

और फिर मैंने दिल्ली में एक *Magazine* (रसाला) देखा, उसमें अमेरिका के किसी मिशन, कोई संस्था है, उसने मद्रास के आसपास कहीं पर एक स्कूल खोला है। वहाँ कमज़ोर और लूले, लंगड़े बच्चों को रखा जाता है और उनको पाला जाता है (यह काम अच्छा है) लेकिन उसके पीछे उनका उद्देश्य क्या है ? उस स्कूल व संस्था का नाम रखा है उन्होंने *Christiandale* और वह पनप रहे हैं, पैसे भी यहाँ से ले रहे हैं। जब मैंने वहाँ पर उसके संचालक का नाम पढ़ा तो मुझे बहुत दुःख हुआ, इस बात का कि वह जो संचालक है वह अमेरिका का एक बड़ा माना

हुआ राजनीतिज्ञ है। तो मैं यह देख रहा हूँ कि ठीक है, हमारे लिए धर्म तो सब बराबर हैं, आप धर्म सिखायें किन्तु शिक्षाएँ सिखलायें जबकि वह खुद तो अपने धर्म पर चल नहीं रहे।

अब आज ईसामसीह (जैसिस क्राईस्ट) का दिन है, मैं उस पर भी कुछ कहना चाहता था। जैसिस क्राईस्ट ने क्या किया? क्या सीखा? कहाँ से सीखा? इस बात पर रोशनी नहीं डाली जाती। जेसिस क्राईस्ट का जन्म एक ऐसी जाति में हुआ जिस जाति के असीन लोग, (जिसको हम उदासीन कहते हैं) पुनर्जन्म को मानते थे और वह यह भी मानते थे कि जैसे गीता में लिखा है कि जब धर्म की हानि होती है तो अवतार होता है, वह अपने इसराईल के अन्दर उस अवतार की प्रतीक्षा कर रहे थे। और 'मैरी' उस जाति की एक कन्या थी, कन्या को पूजते हैं, उसको तैयार किया गया कि उसके अन्दर एक पवित्र आत्मा आकर के जन्म लेगी। और जब उसने जन्म लिया तो उस वक़्त (आज के दिन की बात है) कहते हैं कि तीन ऋषि पूर्व से गये, उन्होंने जहाँ उसका जन्म हुआ

था, सितारा देखा तो उन्होंने कहा कि यह एक बड़ी पवित्र आत्मा का अवतार है। जब वह सात साल या ग्यारह साल का हो गया था वही तीन ऋषि उसको पूर्व में ले गये। कहाँ ले गये? यह लिखा नहीं है लेकिन ईसामसीह (जैसिस क्राईस्ट) का ग्यारह साल का इतिहास नहीं है जो अब मिला है, जिसके हिसाब से वह उसको कश्मीर के रास्ते से उधर से निकाल करके अफ़ग़ानिस्तान से तिब्बत से, किसी तरह निकाल के भारत में लाये! और जगन्नाथ पुरी में जाकर के उसने वेदान्त की शिक्षा ग्रहण की। फिर उसने योग सीखा और यह साधना करने के बाद वहाँ जाकर के उसने अहिंसा का और योग का प्रचार किया, यह बात अब निकली है।

अमेरिका में *A.R.E. Association for Research and Enlightment* अर्थात् खोज और ज्ञान की संस्था, जहाँ महाराज जी भाषण देने जाया करते थे, उस का चलाने वाला था *Ecgar Cayce*, उसमें पिछले जन्मों के भ्रष्ट योगी होने के कारण एक क्षमता थी कि जब वह लेट जाता था, तो उसको सब ज्ञान

हो जाता था। मैं बता रहा था कि जो भी घटित हुआ है वह आकाश में अंकित है, उसको उसका ज्ञान हो जाता था और इसलिए वह बहुत लोगों के बल्कि सब लोगों के पिछले जन्म बता देता था और उस जन्म की घटनाओं की जाकर के फिर जाँच होती थी, हजारों ऐसे *Cases* हैं। (उसने कहा है मैं नहीं कह रहा !) कि बाईबल के अन्दर यह सच्चाई नहीं लिखी है लेकिन जैसिस क्राईस्ट भारत में गया ! उसने वहाँ पर योग सीखा। यह बात लिखी नहीं है लेकिन उसने किताबों में यह सब लिखा है, वह भ्रष्ट योगी था। *Edgar Cayce* ने ही पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त को इस वक़्त सारे पश्चिम के अन्दर फैला दिया। सन् 1945 में उसकी मृत्यु हुई थी। उसने कहा है कि उसके बहुत जन्म हुए हैं और उसने कहा है कि जैसिस क्राईस्ट पुनर्जन्म को मानता था। उसने यह भी कहा है कि ईसाइयों की एक किताब है, बाईवल के अन्दर, एक्ट वन, एक्ट टू उनकी किताबें हैं, एक तीसरी है एक्ट थ्री, वह नहीं मिलती, उसने कहा उसके अन्दर जैसिस क्राईस्ट ने अपनी माँ से कहा है कि उसके

कितने पिछले जन्म हुए थे और उसकी माँ के कितने पिछले जन्म हुए थे। तो यह सच्चाई है लेकिन आज जिस तरह से और जिस ग़लत रास्ते से हमारी संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है, यह दुःख की बात है। हालाँकि दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज ने भी इस बात को प्रमाणित किया है कि जितनी भी संस्कृतियाँ हैं, जितने भी धर्म हैं वे केवल एक सनातन धर्म से निकले हैं। दाता दयाल ने एक किताब, "दुनिया असल और नसल की नज़र से हिन्दू है" नाम की भी लिखी है। तो हम जा रहे हैं *Running after shadow* अर्थात् हम छाया के पीछे भाग रहे हैं और असलीयत को छोड़ रहे हैं, यह देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। इसलिए मुझे परम दयाल जी महाराज की याद आई, जो उन्होंने कहा था कि ऐसी संस्था होनी चाहिए जिसमें कि कम से कम हमारे जो भारतीय बाहर बसे हुए हैं उनके बच्चों को तो यहाँ की संस्कृति की शिक्षा दी जाय! मुझे ऐसी प्रेरणा हुई है कि सबसे पहले *Saint Faqir Manavta Public School* खोलने चाहिएँ। आज रात को मैं आ रहा था, रास्ते में देखा कि *Saint*

Josef खुला हुआ है यहाँ, कहीं *Saint John* खुल जाता है, कहीं *Saint Mary* खुल जाता है तो मैं चाहता हूँ कि *Saint Faqir Manavta School* हों। *Manavta* का मतलब फिर भी हम एक तंग दृष्टि से कह रहे हैं, यह बहुत ज़रूरी बात है, महाराज जी की बड़ी इच्छा थी और मैं चाहता हूँ ऐसे स्कूल होने चाहिएँ, आशा है कि इससे शिक्षा फैलेगी।

तो मैं आपको यह बताना चाह रहा हूँ कि जो विज्ञान आज है, हम विज्ञान की निन्दा नहीं करते, विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है लेकिन कहाँ से उन्नति की ? आपको यह मालूम होना चाहिए कि इस वक़्त का जो विज्ञान है वह *Einstien* (आईन्स्टाईन) के आधार पर है। *Einstien* हमारी इस शताब्दी का सबसे बड़ा वैज्ञानिक हुआ है। जो एक जर्मन यहूदी था। उसने एक सिद्धान्त बताया जिसको *Theory of Relativity* कहते हैं। उसके मुताबिक सब चीज़ सापेक्ष है। काल और देश, समय और फैलाव इसका कोई अन्त नहीं, असल में यह निसबती है, इससे परे कोई और चीज़ है, वही परमतत्त्व है। लेकिन उसने

जब यह सिद्धान्त निकाला कि टाईम जो है अपने आप में कुछ नहीं है हमारे मन पर निर्भर करता है तो इस बात के आधार पर उसने विज्ञान में जो एक नई चीज़ निकाली है उसके आधार पर सारा विज्ञान चल रहा है। लेकिन उसका जीवन आप पढ़ें उसने कहा है कि मुझे यह सिद्धान्त कहाँ से मिला ? उसने जर्मनी भाषा में संस्कृत की एक पुस्तक का अनुवाद पढ़ा था जिसमें यह सिद्धान्त लिखा हुआ था, और हमें संस्कृत का नाम लेते शर्म आती है।

मैं आपको बता रहा था, एवं शब्दाख्ये, जो शब्द आकाश में है वह प्रसारित है। अगर उस समय के एक नाटककार (कालिदास) ने यह बात लिखी कि आकाश का गुण शब्द है, उसकी किरणें हैं तो क्या उस समय के वैज्ञानिक यह नहीं जानते थे कि इन किरणों को कैसे पकड़ा जा सकता है। तो यह जहाँ तक विज्ञान की बात है, केवल सनातन धर्म ही ऐसा है, हमारी संस्कृति ऐसी है कि जो, जितनी भी तरक्क़ी विज्ञान करता जाये उसके धर्म का जो आधार है वह डगमगा नहीं सकता, बिलकुल वैज्ञानिक है।

तो पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन, बुद्धि और अहंकार ये सब द्रव्य हैं, ये सब माद्दा हैं, कोई धर्म ऐसा नहीं कह सकता, ये नाशवान् हैं इनका समय होता है, ये सब चीज़ें समय के बाद नष्ट हो जाती हैं लेकिन इन सब चीज़ों के चलाने वाली शक्ति है, जो पवित्र, शुद्ध तत्त्व है, जो बिन्दु है, जो सारे जगत् को धारण करने वाला है, वही परमतत्त्व ही हमारे अन्दर एक मात्र चेतन है जो क़ायम और दायम है, जब उसका ज्ञान हो जाता है तब जाकर के नाम, ध्यान और भजन के द्वारा आदमी उस अवस्था को पहुँचता है जिसको पाने के बाद फिर उसका जन्म नहीं होता। यही बात आज महाराज जी के टेप से भी आप सुन रहे थे। गुरु तारता है, गुरु ज्ञान देकर तारता है और इस ज्ञान को समझने के लिए पहले मन को इकट्ठा करने का साधन बताया जाता है। सुमिरन, ध्यान और भजन साधन हैं, साध्य नहीं हैं, हमारा उद्देश्य नहीं हैं, हमारा लक्ष्य और हमारी मंज़िल नहीं हैं लेकिन मंज़िल के रास्ते पर चलने की सीढ़ी हैं। **आज शब्द था :—**

तारने वाले ने तारा, तर गये सब तर गये।
जिस को तरना था तरे, भवनिधि के वह तट पर गये।।

उस ताक़त, क़ायम व दायम वस्तु का अंश हमारी सुरत है कि जिधर चाहे उधर अपने आप को लगा ले। जब सुरत शरीर में लग जाती है तो अपने आपको शरीर समझने लगती है। इसलिए शरीर के सुख और दुःखों का अनुभव करने लगती है। ज़्यादातर लोगों को सुरत शरीर में ही लगी रहती है, इसलिए सुख और दुःख शरीर के ज़्यादा होते हैं। सुरत मन में लग जाने से मन केन्द्र बन जाता है। पश्चिमी लोगों ने सुरत लगा दी भौतिक जगत् को खोजने के लिए और उस में पराकाष्ठा पर पहुँच गये, आप इस बात से इन्कार नहीं सकते कि विज्ञान ने कितनी उन्नति की है। उन्होंने उधर लगा दी और हमारे भाइयों ने न इधर लगाई न उधर लगाई, उन्होंने आजकल सुरत लगा दी है अपने स्वार्थ में, धोखे-बाजी में, चालाकी में और इस कारण उनके अन्दर वे नीचे से नीचे गिरते चले जा रहे हैं। उसी सुरत को लगाना है ऊपर, ऊपर लगाने के साधन हैं सुमिरन,

ध्यान, भजन लेकिन उस से पहले यह ज़रूरी है कि मन को शुद्ध किया जाये, तरने वाले तब तरते हैं।

भवनिधि अर्थात् भव का समुद्र। भव का मतलब है होना। भव क्या है? मन के ख़्यालात, आशाएँ, तरंगें, मन के संकल्प, फुरना और विचार यह सब हमारा भव है। इस बात का ज्ञान हो जाना कि शरीर, मन व आत्मा भी वह तत्त्व नहीं है जहाँ अन्तिम हमें जाना है बल्कि यह सब कुछ जो है यह उसी तत्त्व के आधार पर है जिसको पाने के बाद शरीर, मन और आत्मा अपने आप एकसार हो जाते हैं यही मतलब है भवनिधि के तट पर जमने का। तरने वाले वही हैं जो गुरु की बात को सुन कर गुनते हैं। गुरु वाक् ही मन्त्र है। मन्त्र शब्द का अर्थ है प्राण या जड़ जो कि हमें बचाता है, जो हमारी रक्षा करता है वह मन्त्र है। गुरु ने जो कह दिया वह आप की रक्षा करेगा, गुरु वाक को मन्त्र मानने में ही आदमी के अन्दर धीरे-२ उन्नति होती चली जाती है :—

लालची कामी तरे, क्रोधी तरे, मोही तरे।

नीची योनी में जो थे, वह नाम ले ऊपर गये ।।
तारने वाले ने तारा, तार तरने का बंधा ।
अब हो क्या चिन्ता किसी को, उसके दर पर जो गये ।।

इसमें कोई शक़ नहीं है कि जब तक हम उसके दर पर नहीं जाते हैं, जब तक हम अपने ही ज़ौऊम (अकड़) में, अपने ही प्रयास को, अपनी ही बुद्धि को समझ रहे हैं कि यह हमें रास्ता दिखाने वाली है तब तक दुनिया के काम भी सीधे तरीक़े से नहीं होते । तार बंधने का मतलब यह है कि हम अपने घर का काम करते हुए, अपने व्यवसाय व व्यापार का काम करते हुए यह समझें कि यह सब कुछ उसी की कृपा है और उसी का है, अन्तर में तार उसी के साथ जब बंधी हुई होगी तब आप के सारे काम सहज में हो जायेंगे । यह अवस्था सब में आ सकती है, उसके लाने, उसकी बार-बार याद दिलाने के लिए ही सत्संग की ज़रूरत है । हनुमान् समुद्र लाँघ तो गया लेकिन उसको याद दिलाया गया, अरे ! तेरे अन्दर शक्ति है तब वह राम का नाम लेकर गया । यह सत्संग याद दिलाने के लिए हो है । कहाँ भूले पड़े हो, ख़ामख़ाह अपनी शक्ति को समझते

हो मैं कर रहा हूँ, मैं कर रहा हूँ। जो चीज़ हम समझते हैं मैं कर रहा हूँ, मैं कर रहा हूँ, वह तो होनी ही होती है। अगर कोई कहे कि मैंने इतना धन पैदा कर लिया, मैं प्रोफेसर हो गया, वह तो होना ही था लेकिन एक चीज़ हमारे हाथ में जो है वह यह है या तो हम उस मालिक को मान कर चलें या नहीं मान कर चलें। जब एक बार यह निर्णय कर लिया कि हम तो मान के चल रहे हैं, हम तो नाम ले के चलेंगे, हम तो गुरु को स्वीकार करके चलेंगे तब बाकी चीज़ें जो हैं वे सहज में होने लग जाती हैं, तार बंधने का मतलब यही है :—

आये शरनागत जो उसके, कर लिया जीवन सफल।
अब नहीं तरने में संशय, काम अपना कर गये ।।

शरणागत की अवस्था यही है। यह अवस्था मन की एक धारणा (*attitude*) है, यह एक किस्म का हमारा अन्दरूनी ब्यवहार है कि अन्दर से शरणागत हो जाना और बाहर के दुनिया के सारे काम करना। महाराज जी ने कौन से काम हैं जो नहीं किये। बच्चों की शादियाँ कीं, कौन कहता है कि आप यह मत करो, कौन कहता है कि धन मत

कमाओ, कौन कहता है कि पत्रकार मत बनो या राजनीति में नहीं जाओ। यह केवल अन्दर से एक भेद की बात है। अन्दर से शरणागत होने के बाद सभी काम हो जायेंगे, किसी को कहो मत! ख़ुद परम सन्त हो जाओगे :—

राधास्वामी ने दया की, लाये नौका शब्द की।
जो चढ़े वह तर चले, चूके जो वह सब मर गये ।।

यह बड़ा अच्छा भेद है। शब्द जो है हमारे अन्दर में है। जो शब्द को समझ गये, उसका ज्ञान जिनको हो गया वे तर गये।

मासिक सन्देश

प्यारे सत्संगियो,

राधास्वामी ! परम दयाल जी सहाय !

पिछले महीने से मानव मन्दिर में अंग्रेज़ी भाषा में भी लेख छपने शुरू हो गये हैं। यह इसलिए शुरू किया गया है ताकि ख़ासकर विदेश में जो सत्संगी भाई और बहनें हिन्दी भाषा नहीं पढ़ सकते इन लेखों से लाभ उठा सकें। इस महीने की पत्रिका में अंग्रेज़ी भाषा में 'सिद्ध सत् पुरुष फ़कीर बाबा' पुस्तक में परम दयाल जी महाराज द्वारा दी गई भूमिका भी अंग्रेज़ी में प्रकाशित की गई है। जब मैं इस भूमिका का अंग्रेज़ी में अनुवाद कर रहा था, तो मेरा यह विचार हुआ कि परम दयाल जी महाराज ने इस भूमिका के अन्तिम भाग में जो विचार ज़ाहिर किये हैं, उनके आधार पर ही मैं आप तक यह मासिक सन्देश पहुँचाऊँ। उसमें उन्होंने लिखा है कि उन्होंने अपने

जीवन में अपने गुरु की उस आज्ञा का पालन किया जिसके मुताबिक उनके ज़िम्मे यह ड्यूटी लगाई गई थी कि वह चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल दें। दाता दयाल को इस आज्ञा को पालन करने के लिए ही उन्होंने यह लिखा है, "मैंने जो कुछ अनुभव किया, कह दिया। स्वर्गीय प्रिंसिपल श्री रलाराम, जो पंजाब में आर्य समाज के एक मुख्य नेता थे, वो मेरे सत्संगों के भावों को, विचारों को वेदों, शास्त्रों और उपनिषदों के मन्त्रों से सिद्ध किया करते थे। इसी प्रकार यह मानव दयाल भी शास्त्रों और प्राचीन ग्रन्थों से मेरे विचारों की पुष्टि करता है।" उन्होंने इसी ख्याल को सामने रखते हुए मुझे यह आज्ञा दी कि मैं हँस कर इस सच्चाई को ब्यान करूँ कि सन्त-मत और सत्त सनातन धर्म या मानव धर्म एक है। इसी सच्चाई को ब्यान करने से ही शिक्षा को बदला जा सकता है।

धर्म शब्द का मतलब यहाँ पर किसी सम्प्रदाय से नहीं है। सम्प्रदाय या फिरका मनुष्य को अलग करता है। धर्म का असली मतलब वो आधार है,

जिस पर सारा जगत् चल रहा है,
अलख, अगम, अनामी और दयाल
को परमतत्त्व, परम धाम, अक्षय
वग़ैरह कहा गया है। यह हमारे
आत्मा से भी परे है। उसका
वो क़ायम और दायम है। पूर्ण मानव वहीं है
समझ लेता है कि यह अविनाशी तत्त्व सबके अन्दर
मौजूद है। यही वो परम गुरु है जिसके जान लेने से
मनुष्य अभय हो जाता है। जो इस राज़ को समझ
लेता है, वह किसी से नफ़रत नहीं करता और किसी
भी धर्म का खण्डन-मण्डन नहीं करता। खण्डन करना
या नफ़रत करना अलगाव है, अनेकत्व है, प्रेम करना
और सभी धर्मों की इज़्ज़त करना एकत्व है।
जो लोग नफ़रत करते हैं, वे परम तत्त्व यानि परम
धर्म से दूर होते जा रहे हैं। जो सबको बिना द्वेष-
भाव के देखते हैं वे परमतत्त्व के निकट होते जा
रहे हैं, यही असली धर्म है। इसी को हम मानव धर्म
कहा जा सकता है।

सन्तमत ने इसी परमतत्त्व को आधार बताकर
कोशिश की है कि सभी धर्मों वाले लोग एक दूसरे

न समझ कर धर्म के झगड़ों को समाप्त करके के रास्ते पर चलें। इसी सच्चाई को ब्यान करते हुए परम दयाल जी महाराज ने लिखा है, "और कई जगहों पर सन्तमत के प्रचारक हैं। मैं चाहता हूँ कि वे सब खण्डन-मण्डन को छोड़कर केवल मानव धर्म को ही अपनायें। इसी मानव धर्म में सभी मत-मतान्तरों की विचारधाराएँ आ जाती हैं। अगर कोई सम्पूर्ण विद्या को जानना चाहता है, वो केवल निर्बन्ध पुरुष की संगत से ही आ सकती है, और वो भी तब जब चित्त की वृत्तियाँ निरोध को प्राप्त हों और इस निरोध को प्राप्त करना योग के बिना नहीं हो सकता :—

योगश्च चित्तवृत्तिनिरोध: ।"

उनके आखिरी वाक्य का मतलब यह है, कि चित्त की वृत्तियों पर काबू पाना ही योग है। इसी मतलब के लिए सन्तमत में सुरत-शब्द योग की शिक्षा दी जाती है। सुमिरन, ध्यान और भजन से मन को इकट्ठा किया जाता है, इससे काम, क्रोध, लोभ और अहंकार मन की स्थूल वृत्ति को काबू में लाया जा

सकता है। सुमिरन, ध्यान और शब्द के सुनने से मन की पूर्ण वासनाओं और आशाओं को भी अपने काबू में किया जा सकता है, जिन्हें सूक्ष्म वृत्तियाँ कहा गया है। इसी सुरत-शब्द योग से धीरे-धीरे मन से ऊपर उठने के बाद और प्रकाश का अनुभव करने के बाद, आत्मा के आनन्द का अनुभव किया जा सकता है। लेकिन परम धाम को पाने के लिए इस आनन्द से भी परे सत्, चित् और आनन्द की वृत्तियों को समाप्त करने के बाद अपने आपे यानि कि अपनी ज़ात का अनुभव किया जा सकता है। यही अनुभव साधारण मनुष्य को परम सन्त बना देता है। परम सन्त सभी धर्मों और मत-मतान्तरों से अलग होता है। वह किसी धर्म, सम्प्रदाय या विचारधारा का खण्डन नहीं करता, यही सच्चा मानवता धर्म है। इसी विचार को सामने रखते हुए दाता दयाल ने कहा है कि प्रत्येक मनुष्य को हर पहलू से मानव बनना चाहिए। परम दयाल जी महाराज ने इसी मानवता धर्म की नींव रखते हुए मानवता मन्दिर स्थापित करने की कल्पना की और होशियारपुर में 15 अगस्त 1947

को भारत के स्वतन्त्रता दिवस के मौक़े पर "मनुष्य बनो" का झण्डा फहराया। मानवता मन्दिर की स्थापना तो बाद में हुई।

उन्होंने यह सब कुछ शिक्षा को बदलने के मक़सद से किया। सारे विश्व में 95 वर्ष की आयु तक अपने अनुभवों के आधार पर सत्यता को फैलाते हुए उन्होंने लाखों मनुष्यों के जीवन को बदल दिया, उन लोगों में से बहुत से आचार्य, प्रोफेसर और शिक्षक भी हैं। इसमें कोई शक़ नहीं कि ऐसे नेताओं और शिक्षकों ने परम दयाल जी-महाराज के सत्संग से जो सच्चाई प्राप्त की है, वो उन्हें, इस सच्चाई को दूसरों से बाँटने की प्रेरणा देगी, इस तरह से साधारण शिक्षा में परिवर्तन ज़रूर होगा। सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि अब भी मानवता मन्दिर से बहुत से आचार्यों और शिक्षकों को प्रेरणा मिल रही है। इसका एक उदाहरण 4 दिसम्बर 19[illegible]2 को घटित हुआ। वह दार्शनिकों का सम्मेलन था जिसमें एक गोष्ठी रखी गई थी। इस गोष्टी में पश्चिम के एक विद्वान सन्त प्लोटाइनस् के उन विचारों पर प्रकाश डाला

गया जो सन्तमत से मेल खाते हैं। इसकी पहली बैठक मानवता मन्दिर में प्रात:काल 9 बजे से 1 बजे तक हुई। इसकी दूसरी बैठक साधु आश्रम, होशियारपुर में हुई। यह सम्मेलन बहुत ही सफल रहा। बहुत से भारत के दूर-दूर के विश्वविद्यालयों से आये हुए दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर परम दयाल जी महाराज के विचारों से बहुत प्रभावित हुए। उन्हें मानवता मन्दिर में ठहरने से बहुत शान्ति मिली। कुछ प्रोफेसर तो यह कहने लगे कि वह मानवता मन्दिर में स्थाया रूपे से ठहरना चाहेंगे।

ऐसी घटनाओं को सामने रखते हुए और परम दयाल जी महाराज की उस इच्छा को ध्यान में रखते हुए जिसमें उन्होंने यह विचार प्रकट किया था कि भारत में एक विदेशियों को शिक्षा देने की संस्था कायम करनी चाहिए, एक विश्वविद्यालय की योजना को सफल बनाने के लिए कोशिश की जा रही है। इस योजना के मुताबिक फ़कीर मानवता अन्तर् राष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किया जायेगा। इस विश्वविद्यालय में विज्ञान, कला, दर्शन और धर्म सभी

बिषय पढ़ाये जायेंगे। इन सभी को पढ़ाते समय मानवता धर्म की शिक्षा साथ जोड़ी जायेगी। सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि भारत के सभी नगरों में 'सन्त फ़कीर मानवता पब्लिक स्कूलों' को स्थापित करने की योजना भी इसी में शामिल की गई है। इस योजना की सूचना मिलने पर भारत के भिन्न-भिन्न भागों से बहुत से लोगों ने इस काम को सफल बनाने के लिए सहयोग देने का वादा किया है। ऐसी याजना से मानवता धर्म, शिक्षा का आधार बन सकता है और परम दयाल जी महाराज की इच्छा सफल हो सकती है।

मैंने आपको यह सूचना इसलिए दी है कि आप इस विषय में अपने विचार मुझ तक भेज सकें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आप सबको सद्भावना देता हूँ और आशा रखता हूँ कि दिन-प्रतिदिन रूहानियत के मार्ग पर चलते हुए पूर्ण मनुष्य बनने की कोशिश करेंगे। सबको राधास्वामी !

आपका फ़कीरम.

—मानव

श्रीमती सुरक्षा वर्मा जी का पत्र

आदरणीय परदेसी जी तथा नारायण दास जी,

राधास्वामी !

नवम्बर अंक 'मानवता मन्दिर' में छपे पूज्य माता जी के पत्र ने मेरी सुप्त भावनाओं को यूँ झकझोरा कि मेरी मूक भावनाएँ भाषारूपी धारा के प्रवाह में बह उठीं, अतीत की समस्त कल्पनाएँ साक्षात् होने पर बाध्य हो गईं, मानवता का स्वप्न साकार हो मेरे सम्मुख नृत्य कर उठा। झट किसी अदृश्य शक्ति ने मेरे मस्तक को पूज्या माता जी के चरणों में झुका दिया और एकाएक भाव, शब्दों में ध्वनित हो गूँज उठे—'जगत् जननी माँ हम सब आपके आभारी हैं, जिन्होंने हमारे (पूज्य मानव दयाल जी महाराज) परम पूज्य पिता जी को मानव कल्याण के लिए कर्त्तव्यरूपी मार्ग पर अग्रसर होने के लिए उन्हें संकीर्ण बन्धनों से मुक्त किया। यह ही नहीं अपितु स्वयं भी जगत् जननी के रूप में उनकी सहचारिणी

बनकर मानवरूपी दीपक से अमानवता के अन्धकार को चीरती हुई समस्त मानव समाज को मानव प्रकाश से प्रज्वलित करने के लिए आगे बढ़ने पर आतुर हो उठीं, हमारे पूज्य पिता जी की रक्षा और सुरक्षा के लिए सदैव उनकी सेवा में दत्तचित्त रहीं। व्यष्टिगत की संकीर्ण परतों को भेदती हुई समष्टि-गत की ओर चलती रहीं। समस्त पीड़ित मानव आज आपके नेह तथा स्नेह को पाकर गद्गद हो उठा है, कृतकृत्य हो उठा है मानव आपके इस परोपकार के लिए। ममत्व तथा नेह की वर्षा सदैव हमारे जीवन को सींचती रहे, यही प्रार्थना है। आशा है कि हम सब आपके तथा पूज्य पिता जी के पदचिन्हों पर चल कर ईर्ष्या, विद्वेष, स्वार्थ तथा तू और मैं की गर्त से निकल कर मानव बन सकें और ऐसे संसार में डूब जायें जहाँ मनुष्य, मनुष्य में कोई भेदभाव न रहकर समस्त प्राणी ब्रह्मानन्द के रस में डूब जायें। शक्ति दें पिता जी कि यह तुच्छ पुत्री आपके उपदेशों का पालन करती हुई अपने जीवन को पवित्र कर सके तथा मानव कल्याण के हित में सहयोग दे पाये।'

आज उस दिन की घटना को स्मरण करते हुए अपनी अज्ञानता पर हँसी आती है, जिस दिवस मेरे पूज्य काका जी (जसवन्त वधवा जी) का मुझे होशियारपुर मानवता मन्दिर से पत्र आया, केवल मुझे यह सूचित करने के लिए कि आप हिसार में नहीं हैं। 'होशियारपुर' शब्द पढ़ते ही मन उद्विग्न हो उठा। विचारों तथा प्रश्नचिन्हों का ताँता सा बन्ध गया! प्रश्न पर प्रश्न आख़िर ऐसा क्यों? किसलिए? काका जी किस खोज में हैं? इसी द्वन्द्व, में कुछ दिवस व्यतीत हो गये। एक साथ अकस्मात् काका जी आ गये। उन्हें देखते ही इच्छा हुई कि झगड़ पड़ूँ उनसे। विचित्र संघर्ष था मन में। अपने समस्त उद्गारों को उनके समक्ष उगल देना चाहती थी परन्तु समय का अभाव तथा परिस्थितियों ने मूक रहने के लिए बाध्य कर दिया मुझे। इधर, उधर लोकव्यवहार की बातों में ही 10 बज गये रात्रि के। मुझे ज्ञात था कि उन्हें प्रातः चार बजे पुनः चले जाना है, प्रातः हुई, वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गये। उनके मुख पर एक विलक्षण मुस्कान थी। वे भी मौन थे, लगता था कि वे मेरी मानसिक अवस्था

को भाँप कर ही मुस्करा रहे हों। सव कुछ समझने पर भी उन्होंने मुझे समझाना उचित न समझा, सम्भवत: इसलिए कि वे चाहते हों कि मैं स्वयं ही सब कुछ समझ सकूँ ! पूज्य पिता जी के प्रकाश की झलक दिखा देना ही उपयुक्त समझा। प्रात: 4-30 पर पूज्य पिता जी संगत सहित जब आये तब काका जी उसी अवस्था में मुझे छोड़ कर आगे बढ़ गये। पिता जी के मुख से केवल यह आश्वासन दिलाकर कि 27 नवम्बर को वे अवश्य लौटते हुए मेरी कुटिया में आयेंगे।

आशा को थामे प्रतीक्षा का समय कटा। वचन अनुसार 27 प्रात: पूज्य पिता जी सत्संगियों सहित इस तुच्छ पुत्री की कुटिया में आये। उनके दर्शन करते ही आनन्द की अनुभूति सी हुई परन्तु वह इतनी गहन न थी कि मेरी मन की उद्विग्नता को लोप कर पाती कारण कि मैं स्वयं ही मन तथा मस्तिष्क के संघर्ष में इतनी डूबी हुई थी कि उस आनन्द को मैं भाँप न सकी। अब उसकी अनुभूति होते ही मन विभोर हो उठता है। मन-पटल पर विलक्षणता का आभास, मन तथा मस्तिष्क के संघर्ष में मैं समस्त औपचारिकता को ही भूल गई। अतिथिजन

की सेवा भी तो न कर पाई पूर्ण रूप से ! इतना साहस तथा शक्ति मुझ में न थी कि पूज्य पिता जी को अपनी मन:स्थिति से परिचित करा दूँ तथा संशय को दूर कर सकूँ, विचित्र अवस्था थी मेरी। एक ओर गृहिणी कर्तव्य तथा ममत्व बली था तथा दूसरी ओर मेरी निजी शंकाएँ तथा अज्ञानता पूज्य काका जी, गोपाल दास जी तथा नेगी (डाक्टर साहिब) भय्या से बात करनी चाही परन्तु वे भी तो मेरी उद्विग्नता को न समझ सके। सम्भवत: मैं ही उन्हें अपनी उलझन न समझा पाई। समय का अभाव था परन्तु मेरी यह अवस्था पावन पिता जी से छिपी न रह पाई, ऐसा लगा मानो उनकी एक दृष्टि ने मेरे अन्तस्तल में झाँक कर सब कुछ भाँप लिया हो। मुझे पास बुलाया तथा अपनी वास्तविकता को छुपा मुस्कराते हुए हस्तरेखा को पढ़ने लगे। उनकी दृष्टि में एक विशेष प्रकाश था। ऐसा आभास होने लगा मानो मेरी मानसिक स्थिति से वे अनभिज्ञ न हों। लज्जित हो उठी अपनी अज्ञानता तथा मूर्खता पर। उनके इन शब्दों ने कि "सुना है तुम कुछ विक्षिप्त हो" मुझे पानी-पानी कर दिया। स्वयं को उत्तर

देने में असमर्थ समझा तथा मन ही मन ग्लानि होने लगी अपनी तुझ बुद्धि पर। मस्तक झुका दिया महान् आत्मा के सम्मुख! उनके इन शब्दों ने मुझे झकझोर कर रख दिया। ऐसा लगा मानो शताब्दियों से बनी तन्द्रा आज टूटी हो। प्रेमवश पुकार उठी 'पावन पिता जी'! जिनकी खोज मुझे वर्षों से थी, ऐसे मानवता के सच्चे स्वरूप कल्पनारूपी भगवान् की साक्षात् सजीव प्रतिमा मेरी कुटिया में आई। गद्-गद हो उठी मन ही मन में, दो घण्टे एक क्षण बन कर रह गये।

उन्हें शीघ्र ही लौटना था। जाने से पूर्व केवल वे एक पत्र मेरे लिए छोड़ गये। 'स्वयं को खोजो स्वयं में, तुम कर सकती हो।' कितना बड़ा है यह प्रश्नचिन्ह!

राधास्वामी!

सुरक्षः

रत्नों का मानव जीवन पर प्रभाव

रत्नों के बारे मैंने कुछ लेख अपनी 25 वर्षीय खोज के आधार पर "हिन्द समाचार" (उर्दू) "ज्योतिष बोध" सहारनपुर व "*Fate and Destiny*" *Delhi* में 1975-1977 में दिये थे। कुन्तु व कुर *Professionalists* के हित में न होने के कारण मैंने लेख देने बन्द कर दिये थे।

4-12-82 को *International Society of Philosophers & Psychologists* के वार्षिक, मानवता मन्दिर होशियारपुर समागम में देश के दूर-दूर कोने से आये हुए *Scholars* को अधिक मात्रा में भिन्न-भिन्न रत्न धारण किये हुए देख कर मुझे यह लड़ीवार लेख लिखने पर बाध्य होना पड़ा। क्योंकि बहुत से व्यक्तियों ने ऐसे रत्न धारण किये हुए थे जो कि ध्यान-समाधि से दूर करते हैं तथा प्रकाश में रुकावट डाल कर व्यक्ति के लिए परेशानी व रोग का कारण बनते हैं।

रत्नों के बारे में जानकारी देने से पहले मैं परम सन्त मानव दयाल डा. ईश्वरचन्द्र शर्मा जी महाराज का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मेरे परेशानी के रोग में अपना *Essence* डाल कर मुझे जीवन का ठीक मार्ग दिखाया, जिससे मुझे इस पत्रिका द्वारा अपने विचार आप तक पहुँचाने का उत्साह मिला।

मैं शुरू में "रत्नों का ध्यान" के सम्बन्ध में ही अपने विचार प्रकट करूंगा। यदि पाठकों की समझ में आया तो जीवन की दूसरी समस्याओं के बारे में जैसे उच्चाधिकारी से विना कारण ग़लतफ़हमी का शिकार होना, घरेलू जीवन में तनाव, लड़ाई, दुकानदार के ग्राहकों में विना कारण कमी व रोग निवारण के सम्बन्ध में अपने विचार रखूंगा।

इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि "हरि नाम" व्यक्ति के सब विकारों को दूर करने का पूर्ण उपाय है क्योंकि परमतत्त्व से सम्बन्ध जोड़ लेने से सभी सांसारिक समस्याएँ दूर हो सकती हैं। व्यक्ति चरित्रवान् हो सकता है, इसी प्रकार व्यक्ति द्वारा धारण किया हुआ रत्न उसके अचेत मन पर अपना

प्रभाव आठों पहर डाले रखता है, वह उचित या अनुचित मार्ग पर भी चला जा सकता है और उसका परिश्रम असफल रह सकता है, तब व्यक्ति निराश हो कर पीछे भी हट सकता है।

वास्तव में इन्द्रधनुष (*Spectrum*) में सातों रंग *V. I. B. G. Y O. R.* (जामनी, लाजवी, नीला, हरा पीला, संतरी, लाल) होते हैं जो कि सफेद रंग के अंश हैं। सफेद रंग ही "प्रकाश" है। ग्रहों के भी अलग-अलग सातों रंग होते हैं, हर ग्रह के रंग का अपना-अपना *Positive* तथा *Nagative rays* का रत्न होता है। व्यक्ति के जन्म समय के आभामण्डल में ये रंग ग्रह की राशि-अंश के अनुसार प्रभावित रहने हैं। सफेद रंग नहीं बनता जो कि शान्ति का प्रतीक है इसीलिए व्यक्ति तनाव में रहता है तथा जब अपने रंग के विरुद्ध कर्म करता है परेशानी में पड़ जाता है। यह ग्रहरूपी रंगों का अनुपात व्यक्ति के इस जीवन में किये कर्मों के अनुसार बदलता रहता है। व्यक्ति अन्तिम अवस्था में सफेद रंग (शान्ति) न पाने के कारण निराश हो जाता है। ये रत्न अपनी

सीमा के अनुसार व्यक्ति के रंगों को ठीक मात्रा में करके उस की अशान्ति में कमी कर सकते हैं।

मैं ध्यान के बारे में रत्नों के वर्णन से पहले यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि सभी रत्न घबराहट पैदा करते हैं। इसलिए रत्न को हर व्यक्ति की अपनी सामर्थ्य के अनुसार वज़न में धारण करना चाहिए।

ध्यान में रुकावट पैदा करने वाले तो बहुत से रत्न हैं जिनका लड़ीवार वर्णन आने वाले लेखों में करूंगा किन्तु मैं प्रारम्भ में यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि 'नीलम' ऐसा रत्न है जो व्यक्ति में अहंकार, चञ्चलता तथा धन कमाने की चिन्ता उत्पन्न करता है और ध्यान से बहुत दूर कर देता है, उच्च रक्त-चाप, घबराहट, हृदय की धड़कन, कार्डिक ट्रबल तथा वार्यदोष का कारण भी बनता है। 'मूँगा' व्यक्ति का ध्यान अपनी आन्तरिक कमियों की ओर ले जाता है किन्तु मर्दाना ताक़त पैदा करता है। "मानक" व्यक्ति में क्रोध व आत्महत्या का विचार उत्पन्न करता है, मस्तिष्क की खराबी का रोग पैदा करता है तथा यह ध्यान में रुकावट बन सकता है। आध्यात्मिक

जीवन पर सभी कथनों के अनुसार 'बृहस्पति' का बहुत प्रभाव गिना गया है। 'यूरेनस' व 'नेपच्यून' भी अपना पूरा-पूरा अधिकार इस पर जमाये हुए हैं। मगर 'शनि' जिसको आप बेशक पापी ग्रह कहें, मेरे विचार में यह व्यक्ति को कठिनाइयों में डालकर जीवन की अन्तिम अवस्था में आध्यात्मिकता की प्रेरणा देता है '*i.e. Life of the frustrations, obstacles and disappointments*'। केतु ही अब एक ग्रह रह गया है जिसको आप क्रूर ग्रह कहेंगे। यह ग्रह बाधाओं का ग्रह गिना जाता है। जिस ग्रह के साथ यह जन्मकुण्डली में पड़ जावे उसके प्रभाव में रुकावट पैदा करने वाला माना गया है।

मेरे विचार में वास्तव में एक 'केतु' ग्रह हो है जो कि व्यक्ति को जीवन का सच्चा मार्ग दिखा कर उसको जंगलों के पार करता हुआ परमतत्त्व की ओर ले जा सकता है क्योंकि यदि व्यक्ति ठीक मार्ग पर चले तो दुर्भाग्य नहीं आता। क्यों न इस बारे में आप अपने जन्म में इस ग्रह की ताकत जान कर इस का रत्न धारण करके, **परम सन्त परम दयाल पं० फ़कीर चन्द जी महाराज** द्वारा **बताये मार्ग** में

इस के रत्न की सहायता लेकर अपना जीवन सफल करें। बाकी पाँचों दोष 'मानव' बन कर व्यक्ति स्वयं दूर कर सकते हैं, जिसके लिए व्यक्ति को सत्संग का सहारा लेना चाहिए।

केतु ग्रह का रत्न "लहसुनिया" है, जिसे धारण करके आप ठीक मार्ग पर चल कर ध्यान-समाधि में आसानी से जा सकते हैं।

कुछ व्यक्ति यह पढ़ कर झट से इस रत्न को धारण करने लगेंगे किन्तु इस बारे में आपको जानकारी देना चाहता हूँ कि 'लहसुनिया' हर रंग में मिल सकता है, इस में बारोक धागे की तरह चलती-फिरती एक लकीर होती है, यह ज़्यादा लकीरों वाला भी होता है। पुरानी खान का झूठा व नयी खान वाला भी है। दूसरे रत्न 'मून स्टोन' व 'टाईगर आई' भी लहसुनिया के समान होते हैं। पुरानी खान का लहसुनिया भी असर रखता है। फिर इसकी शक्ल भी प्रभाव डालती है जैसे गोल आतशी शीशे का आग जलाने में बहुत प्रभाव है जो साधारण शीशे में बिलकुल नहीं। आपको कौन सा बहुत उचित होगा जो कि बुरे ग्रह के असर

को घटा कर अच्छे ग्रह के प्रभाव को तेज करे। आपकी वृत्ति में वृद्धि हो। किस अंगुली में धारण करना होगा इस बारे में आने वाले लेखों में कुण्डली व हस्तरेखा को गिनती में लेकर अपने विचार रखूंगा।

मैं यह भी ज़िकर कर दूँ कि मैं कोई व्यवसाय से *Professionalist* नहीं हूँ। मैं जो कुछ लिखूंगा अपनी खोज व अनुभव पर आधारित करूंगा। मैं उसका धन्यवाद करूंगा जो इसमें मेरी ग़लती बतायेगा।

(क्रमश:)

अजमेर सिंह कुन्द्री
कार्यकारी इन्जीनीयर
पंजाब राज्य बिजली बोर्ड
होशियारपुर।

सत्संगियों से अपील

हमारे पास जो अंग्रेज़ी और हिन्दी की पुस्तकें है, उनका भण्डार हमारे पास लगभग समाप्त होने को है। आज तक जिस किसी ने भी जितनी किताबें मांगीं उतनी ही हमने मुफ़्त भेजीं और आईन्दा भी मुफ़्त भेजते रहा करेंगे, लेकिन हमारे पास किताबों की संख्या सीमित होने के कारण, हम जब तक इनको दोबारा छाप नहीं लेते, हम प्रत्येक व्यक्ति को भेजने में असमर्थ है और इन किताबों को छपवाने हमें काफी रुपया दरकार होगा। जितना-जितना हम में सामर्थ्य होगी हम छपवा कर देते रहेंगे। दूसरे मेरी तरफ से सब केन्द्रों को प्रार्थना है कि जो-जो किताब उनकी लाईब्रेरी में नहीं है उसके बारे में हमें सूचित करें, ताकि हम उनको वो किताबें भेजने का इन्तज़ाम कर सकें।

मैं सब सत्संगियों से अपील करता हूँ कि वे अपने नजदीकी सेण्टर की लाईब्रेरी से ये पुस्तकें

पढ़ने के लिए हाज़िर करें। हमें कुछ ऐसी सूचना मिली है कि कुछ लोग 'मानव मन्दिर' पुस्तक मंगवाते हैं लेकिन उसके पढ़ने में रुचि नहीं रखते। उन सब से मेरी अपील है कि वे पत्र लिखकर अपना मानव मन्दिर बन्द करवा सकते हैं, इसके लिए मैं उनका आभारी रहूंगा। हम चाहते हैं कि इन सत्संगियों की नेक कमाई का, दान में दिये हुए पैसे का, सही इस्तेमाल हो। सबको राधास्वामी !

आप सब का सेवक :

प्रेजिडेण्ट

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधस्वामी।

परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को वारम्वार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास ।।
रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाय ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाय ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग

20-2-83 को होगा ।

Regd. No. 2626574 FEBRUARY 10th 1983
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H No. 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hyderabad 500028 A.P.

From

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022